चेतना के स्वर

कूर्मि समाज के ऐतिहासिक विरासत पर शोधपूर्ण जानकारी

(संस्करण - 2019)

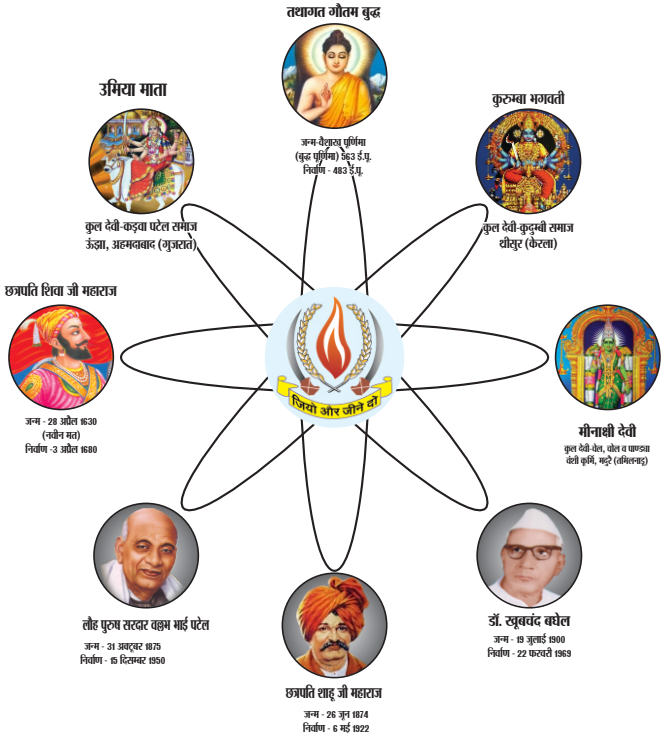

पं क्र.- छ.ग. राज्य/37, दिनांक 06.10.2001

छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच

पंजीकृत मुख्यालय - डॉ. कौशिक क्लीनिक, अशोक नगर, सीपत रोड, सरकण्डा, बिलासपुर (छ.ग.)

फोन : 09826165881, 09425522629, ई-मेल: kurmi.chetna01@gmail.com

ईमेल-kurmi.chetna01@gmail.com 98271-57927, https://www.facebook.com/kurmi.chetna01

चेतना के स्वर

कूर्मि समाज के ऐतिहासिक विरासत पर शोधपूर्ण जानकारी

संपादक मंडल

कूर्मि डॉ. निर्मल नायक,

प्रबंध संपादक

प्रदेशाध्यक्ष-छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच

कूर्मि बी. आर. कौशिक

प्रधान संपादक

मो. 7000992193

कूर्मि सिद्धेश्वर पाटनवार

उप प्रधान संपादक

मो. 9300851771

कूर्मि डॉ. जीतेन्द्र सिंगरौल

संपादक सह प्रदेश महासचिव, छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच

मो. : 9425522629

सम्पादक मण्डल सदस्य :

कूर्मि भारत लाल वर्मा, कूर्मि कोमल पाटनवार ,

कूर्मि श्रीमती भगवती चन्द्राकर, कूर्मि चन्द्रशेखर चकोर, कूर्मि अनिल चंद्राकर

प्रकाशन वित्तीय एवं मार्केटिंग प्रबंधन दल

कूर्मि डॉ. हेमंत कौशिक, कूर्मि लक्ष्मी कुमार गहवई, कूर्मि राजेन्द्र चन्द्राकर,

कूर्मि प्रदीप कौशिक, कूर्मि सुखनंदन कौशिक (प्रदेश कोषाध्यक्ष-छ.ग. कू.क्ष.चेतना मंच)

कूर्मि विश्वनाथ कश्यप, कूर्मि देवी चन्द्राकर, कूर्मि तोखन चन्द्राकर।

अक्षर संगणक एवं मुद्रक

कूर्मि अनिल चन्द्राकर

क्रियेटिव कम्प्यूटर एण्ड ग्राफिक्स एण्ड प्रिंटर्स

तात्यापारा, रायपुर (छ.ग.) मो. 9329111036

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच

RAMESH BAIS
GOVERNOR

रमेश बैस
राज्यपाल

RAJ BHAVAN
AGARTALA-799 010
Tel. : 0381-241-4091
0381-241-0217
Fax : 0381-241-0026
राज भवन
अगरतला -799 010
दूरभाष: 0381-241-4091
0381-241-0217
फैक्स: 0381-241-0026
E-mail : rajbhavanagt@gmail.com
: rajbhavanagt-tr@gov.in

अक्टूबर 17, 2019

संदेश

अत्यन्त ही हर्ष की बात है कि छत्तीसगढ़ कूर्मि–क्षत्रिय चेतना मंच द्वारा भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती समारोह व कूर्मि महाधिवेशन प्ररतावित है।

इस अवसर पर प्रकाशित "चेतना के स्वर" स्मारिका में कूर्मि सगाज की गतिविधियों एवं कार्य प्रणाली से लोगों को अवगत कराते हुए सगाज के लिए उपयोगी होगा। यह स्मारिका न केवल समाज की जानकारी बढ़ाएगा बल्कि नई पीढ़ियों के लिए उनकी जिज्ञासा व व्यवहार परिवर्तन के लिए एक संग्रहणीय कलेवर होगा।

मैं इस स्मारिका के प्रकाशन व कार्यकम के सफल आयोजन की कामना करता हूँ एवं अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

(रमेश बैस)

कूर्मि डॉ0 जीतेन्द्र सिंगरौल,
प्रदेश महासचिव सह संपादक,
छत्तीसगढ़ कूर्मि–क्षत्रिय चेतना मंच,
डॉ0 हेमंत कौशिक, निरामय चिकित्सा केन्द्र,
अशोक नगर, सीपत रोड, सरकण्डा,
बिलासपुर–495 006
छत्तीसगढ़।

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री

Bhupesh Baghel
CHIEF MINISTER

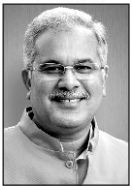

मंत्रालय, महानदी भवन
अटल नगर, रायपुर, 492002, छत्तीसगढ़
फोन: +91 (771) 2221000, 2221001
ई—मेल : cmcg@nic.in

Mantralaya, Mahanadi Bhawan,
Atal Nagar, Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001
E-mail : cmcg@nic.in

Do.No. 507 Date 23/10/2019

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि छत्तीसगढ़ कूर्मि—क्षत्रिय चेतना मंच द्वारा अपने स्थापना के रजत जयंती वर्ष के अवसर पर तीन दिवसीय ''कूर्मि महाधिवेशन'' एवं ''सरदार पटेल जयंती पखवाड़ा समारोह'' का आयोजन 10 से 12 नवम्बर, 2019 तक किया जा रहा है।

हमारे पुरखों के योगदान को याद करते हुए उनके बताए रास्ते पर चलें ताकि आने वाली नवपीढ़ी, समाज व देश के विकास में महती योगदान दे सकें। छत्तीसगढ़ कूर्मि क्षत्रिय समाज एक जागरूक समाज है। छत्तीसगढ़ के विकास में इस समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्मारिका में वैज्ञानिक चिंतन व सामाजिक विकास जैसे विषय का समावेश किया जाना सराहनीय प्रयास है।

आयोजन एवं प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिए मेरी शुभकामनाएं।

(भूपेश बघेल)

धरमलाल कौशिक
DHARAMLAL KAUSHIK

नेता प्रतिपक्ष, छत्तीसगढ़ विधान सभा
LEADER OF OPPOSITION, CHHATTISGARH
LEGISLATIVE ASSEMBLY

क्र.815.../ने.प्र./2019

दिनांक 23-10-19

-संदेश-

प्रसन्नता का विषय है कि छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच द्वारा ''**कूर्मि महाधिवेषन**'' का आयोजन छत्तीसगढ़ की पौराणिक राजधानी रतनपुर में किया जा रहा है।

इस अवसर पर प्रकाशित ''चेतना के स्वर'' कूर्मि समाज के इतिहास, संस्कृति के संदर्भ उपयोगी होगा। यह स्मारिका न केवल समाज के लिए प्रभावशाली वरन् नई पीढ़ियों के लिए उनके जिज्ञासा व व्यवहार परिवर्तन के लिए एक उत्तम अंश होगा।

मैं इस स्मारिका प्रकाशन पर अशेष बधाईयाँ व शुभकामनाएँ .....

DK Kaushik
(धरम लाल कौशिक)

प्रति,
डॉ. जीतेन्द्र सिंगरौल,
संपादक सह प्रदेश महासचिव
छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच

सी–1/10, आनंद नगर, ऑफिसर्स कॉलोनी, रायपुर–492001 (छ.ग.) फोन : 0771-2331055, फेक्स : 2331064
C-1/10, ANAND NAGAR, OFFICERS COLONY, RAIPUR - 492001 (C.G.) Phone : 0771-2331055, Fax : 2331064

स्थापना वर्ष : 1894

पंजीयन क्रं. 882/1909

अखिल भारतीय कूर्मि क्षत्रिय महासभा

All India Kurmi Kshatriya Mahasabha

कूर्मि एल.पी. पटेल, राष्ट्रीय अध्यक्ष फो.: 0755-2612651, मो.: 9425392434

पता : सरदार पटेल स्मारक, अतिथि निवास, एस 14, अंधरापुल, वाराणसी (उ.प्र.) फोन: 0542-2574434

केन्द्रीय कार्यालय :22, वसुन्धरा कॉलोनी, बैंक कॉलोनी के पीछे, जहांगीराबाद, भोपाल (म.प्र.) फोन : 0755-2574434

क्र. अ भा.कू.क्ष महासभा/

दिनांक...31-10-2019

मान. एल.पी. पटेल
राष्ट्रीय अध्यक्ष
(अखिल भारतीय कूर्मि क्षत्रिय महासभा)

-संदेश-

छत्तीसगढ़ में विगत 25 वर्षों से समाज को जागृत व संगठित करने हेतु प्रयत्नशील संस्था **छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच** के रजत जयंती के अवसर पर आयोजित त्रिदिवसीय "**कूर्मि महाधिवेशन**" की सफलता के लिए अग्रिम शुभकामनाएं।

इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका "**चेतना के स्वर**" कूर्मि चेतना पंचाग की तरह एक मील का पत्थर साबित होगा। नि:संदेह यह स्मारिका समाज विकास के लिए बेहतरीन दस्तावेज व संग्रह योग्य कलेवर होगा।

मैं इस स्मारिका प्रकाशन परअशेष बधाईयाँ व शुभकामनाएँ.....

कूर्मि एल.पी.पटेल
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय कूर्मि-क्षत्रिय महासभा

प्रति,
कूर्मि डॉ. निर्मल नायक,
प्रदेशाध्यक्ष,
छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच

ALL INDIA KURMI KSHATRIYA MAHASABHA

Central Office: 22, Vasundhara Colony, Behind Bank Colony, Jahangirabad, Bhopal
(M.P.), Phone: 0755-2574434 | Mobile: 94251-75550

Kurmi Dr. Vijay Singh Niranjan
M.Sc., L.L.B., Ph.D., I.A.S. (Retd.)

National General Secretary

MESSAGE

It is a matter of great pride that**"Kurmi Chetana Panchang"** is being published by the ChattisgarhKurmi Kshatriya Chetana Manch from the historic and religious location of Ratanpur, District Bilaspur, Chattisgarh.

For the past many years, the Panchang has played an important role in integrating our Kurmibrethen across the country. I am sure that the publication of the Panchang this year along with the "Smarika" will play an even more important role in connecting and developing the Kurmi Kshatriya Samaj.

The panchang has information related to the ancient historical and current information and will be certainly useful to all ages of our community and I urge all to ensure a wide publicity to the same and ensure all your homes and work places have a copy of the panchang displayed prominently.

I thank all the members of the committee who have played a vital role in coming out with the Panchang year on year and wish them the very best with the newly introduced **"Kurmi Chetna Jagriti & Chetna Ke Swar Smarika"**, that I am sure will be accepted with all our heart.

Dr. Vijay Singh Niranjan

To:

Dr. Jeetendra Singroul
Editor and State General Secretary
ChattisgarhKurmi Kshatriya Chetana Manch

विजय बघेल
संसद सदस्य (लोकसभा)
छत्तीसगढ़

दूरभाष : 8770360478
9425561150
9981521150

सत्यमेव जयते

जावक क्रमांक VIP/..1495..
दिनांक : 26-10-2019

—:: शुभकामनाएं ::—

अत्यंत गौरव का विषय है कि छत्तीसगढ़ कूर्मि–क्षत्रिय चेतना मंच द्वारा " **कूर्मि महाधिवेशन** " का आयोजन छत्तीसगढ़ की पौराणिक नगरी रतनपुर में किया जा रहा है।

मुझे अवगत कराया गया है कि इस अवसर पर प्रकाशित " **चेतना के स्वर** " स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा हैं। यह स्मारिका कूर्मि समाज के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति व धरोहर का आत्मबोध कराएगा ।

इस स्मारिका प्रकाशन पर अशेष बधाईयॉ व शुभकामनाएं.........

विजय बघेल
सांसद–दुर्ग लोकसभा
प्रदेशाध्यक्ष, छत्तीसगढ़ प्रदेश कूर्मि–क्षत्रिय समाज

प्रति,
डॉ. जीतेन्द्र सिंगरौल,
संपादक सह प्रदेश महासचिव
छत्तीसगढ़ कूर्मि–क्षत्रिय चेतना मंच

निवास- क्वा.नं. 7/B, सड़क 38, सेक्टर 05, भिलाई, जिला-दुर्ग, छ.ग.

छाया वर्मा, संसद सदस्य (राज्य सभा)
Chhaya Verma, MP (Rajya Sabha)
सदस्य / Member :
1. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता संबंधी स्थायी समिति
Standing Committee on Social Justice Empowerment
2. हिन्दी सलाहकार समिति - स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
Hindi Consultative Committee - Ministry of Health & Family Welfare
3. सलाहकार समिति - कोयला एवं खान मंत्रालय
Consultative Committee - Ministry of Coal & Mines

निवास : 501, स्वर्ण जयंती सदन, डॉ. बी.डी.मार्ग
नई दिल्ली - 110001
निवास : सी-2, फारेस्ट कॉलोनी, राजातालाब,
रायपुर (छ.ग.)
Resi. : 501, Swarna Jayanti Sadan, Dr. B.D.
Marg, New Dehli - 110001
Resi. : C-2, Forest Colony, Rajatalab,
Raipur, Chhattisgarh - 492001
Tel. : 0771-2252600
Email : chhayaverma1962@gmail.com

S.No. 1372 Date 18.10.2019

–संदेश–

अत्यंत गौरव का विषय है कि छत्तीसगढ़ कूर्मि–क्षत्रिय चेतना मंच द्वारा "कूर्मि महाधिवेशन" का आयोजन छत्तीसगढ़ का पौराणिक नगरी रतनपुर में किया जा रहा है। मुझे अवगत कराया गया है कि इस अवसर पर प्रकाशित "चेतना के स्वर" स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह स्मारिका कूर्मि समाज के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति व धरोहर का आत्मबोध कराएगा।

मैं इस स्मारिका प्रकाशन पर अशेष बधाईयां व शुभकामनाएं.....

Chhaya.
(छाया वर्मा)
सांसद, राज्यसभा
छत्तीसगढ़

प्रति,

श्री डॉ. जीतेन्द्र सिंगरौल,
संपादक सह प्रदेश महासचिव
छत्तीसगढ़ कूर्मि–क्षत्रिय चेतना मंच

स्थापना वर्ष 1894

पंजीयन क्र.-220/1984-85

अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रिय महासभा

ALL INDIA KURMI KSHATRIYA MAHASABHA

श्रीमती लताऋषि चन्द्राकर, राष्ट्रीय अध्यक्ष (महिला प्रकोष्ठ)

मो.-09826462725, 09302743766

कार्यालय - स्ट्रीट-7, ब्लॉक-9/बी, सेक्टर-10, भिलाई नगर, जिला-दुर्ग (छ.ग.) पिन-490 006

दिनांक ..31/10/2019

श्रीमती लताऋषि चन्द्राकर
राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष

-संदेश-

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि अपने स्थापना के रजत जयंती वर्ष में त्रिदिवसीय ''**कूर्मि महाधिवेशन**'' का आयोजन **छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच** द्वारा आयोजन किया जा रहा है ।निश्चित तौर पर कूर्मि समाज में इसका वृहद लाभ होगा ।

मुझे अवगत कराया गया है कि इस अवसर पर प्रकाशित ''**चेतना के स्वर**'' स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह स्मारिका कूर्मि समाज के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति व धरोहर का आत्मबोध कराएगा।

मैं इस स्मारिका प्रकाशन पर अशेष बधाईयाँ व शुभकामनाएँ देती हूँ.....

कूर्मि श्रीमती लताऋषि चंद्राकर
राष्ट्रीय अध्यक्षा (महिला),
अखिल भारतीय कूर्मि-क्षत्रिय महासभा

प्रति,
कूर्मि डॉ. जीतेन्द्र सिंगरौल,
संपादक सह प्रदेश महासचिव
छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच

छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच

पंजीयन क्र. 37 / छ.ग. राज्य / 06.10.2001

कूर्मि डॉ. निर्मल नायक
प्रदेशाध्यक्ष
पथरिया मोड़ के पास,
बरेला, जिला-मुंगेली (छ.ग.)
मो. : 98261-65881

कूर्मि सुखनंदन कौशिक
प्रदेश कोषाध्यक्ष
देवनंदन नगर, फेस-1,
सीपत रोड, बिलासपुर (छ.ग.)
मो. 8839915253

कूर्मि डॉ. जीतेन्द्र सिंगरौल
प्रदेश महासचिव
ब्लाक नं. 47 /563, दीनदयाल आवासीय फ्लैट
कबीर नगर, रायपुर (छ.ग.)492099
9425522629, ई-मेल-jkumar001@gmail.com

क्र.: कूर्मि चेतना/केन्द्रीय/2017-2020/ 067

दिनांक : 04-11-2019

-संदेश-

अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि **छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच** द्वारा भारतरत्न सरदारवल्लभ भाई पटेल जयंती पखवाडा समापन समारोह व 'कूर्मि महाधिवेशन' का आयोजन समाज के चेतना जागृति हेतु प्रभावशाली व समाज हित में उपयोगी साबित होगा ।

इस अवसर पर प्रकाशित **''चेतना के स्वर''** स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह स्मारिका कूर्मि समाज के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति व धरोहर का आत्मबोध कराएगा।

मैं इस स्मारिका के प्रकाशन दल को बधाईयॉ व कार्यकम के सफल आयोजन के लिये शुभकामनाएं देता हूँ।

(डॉ. निर्मल नायक)
प्रदेशाध्यक्ष
छत्तीसगढ़ कूर्मि-क्षत्रिय चेतना मंच

प्रति,
प्रकाशन दल,
कूर्मि चेतना जागृति स्मारिका

पत्राचार का पता : डॉ. हेमंत कौशिक, निरामय चिकित्सा केन्द्र, अशोक नगर, सीपत रोड, चांटीडीह, सरकण्डा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) 495006, ईमेल-kurmi.chetna01@gmail.com 98271-57927, https://www.facebook.com/kurmi.chetna01

विशेष ध्यानाकर्षण टीप

कई स्थानों में समान समाजिक उपनाम में समानता होने की वजह से भ्रम की स्थिति निर्मित हो जाती है जिसकी वजह से कूर्मि पहचान में भ्रमित हो जाते हैं । जैसे बघेल (कूर्मि, अजा, अजजा) कौशिक (कूर्मि, ब्राह्मण, अजा) नायक व पटेल (कूर्मि, अघरिया, अजा), वर्मा (कूर्मि, कायस्थ) आदि । इस प्रकार के उदाहरण छत्तीसगढ़ प्रांत के अतिरिक्त अन्य राज्यों में भी पाये जाते हैं । अतः इस बाबत् सतर्कता बरतना उचित रहेगा । ऐसी विषम परिस्थितियों में स्थानीय स्वजातिय जन से सम्पर्क कर वस्तु स्थिति को स्पष्ट कर लें ।

कूर्मि समाज का गौरवमयी इतिहास

प्राचीन इतिहास :-

जाति की व्याख्या :-

मूल रूप से मनुष्यों में केवल एक ही जाति है और वह जाति है 'मनुष्य' जाति, अन्य 'जाति' नहीं है। जाति का अर्थ है उद्भव के आधार पर किया गया वर्गीकरण। न्याय सूत्र यही कहता है 'समान प्रसवात्मिका जाति:' अथवा जिनके जन्म का मूल स्त्रोत सामान हो (उत्पत्ति का प्रकार एक जैसा हो) वह एक जाति बनाते हैं। ऋषियों द्वारा प्राथमिक तौर पर जन्म-जातियों को चार स्थूल विभागों में बांटा गया था । **1. उद्भिज:**-धरती में से उगने वाले जैसे पेड़, पौधे, लता आदि। **2. अंडज:**-अंडे से निकलने वाले जैसे पक्षी, सर्प आदि। **3. पिंडज:**-स्तनधारी-मनुष्य और पशु आदि। **4. उष्मज:**-तापमान तथा परिवेशीय स्थितियों की अनुकूलता के योग से उत्तपन्न होने वाले जैसे सूक्ष्म जीवाणु, कीटाणु व बैक्टेरिया आदि। इस प्रकार हर जाति विशेष के प्राणियों में शारीरिक अंगों की समानता पाई जाती है। एक जन्म-जाति दूसरी जाति में कभी भी परिवर्तित नहीं हो सकती है और न ही भिन्न जातियां आपस में संतान उत्तपन्न कर सकती हैं। अत: प्राकृतिक रूप से जाति प्रकृति निर्मित है (वर्तमान जाति का विकृत रूप अर्थात् वर्ण व्यवस्था मानव निर्मित है)। जैसे विविध प्राणी हाथी, सिंह, खरगोश इत्यादि भिन्न-भिन्न जातियां हैं। इसी प्रकार संपूर्ण मानव समाज एक जाति है। ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र किसी भी तरह भिन्न जातियां नहीं हो सकती हैं क्योंकि न तो उनमें परस्पर शारीरिक बनावट (इन्द्रियादी) का भेद है और न ही उनके जन्म स्त्रोत में भिन्नता पाई जाती है। कालान्तर में जाति शब्द का प्रयोग किसी भी प्रकार के वर्गीकरण के लिए प्रयुक्त होने लगा और इसीलिए हम सामान्यतया विभिन्न समुदायों को ही अलग जाति कहने लगे; जबकि यह मात्र व्यवहार में सहूलियत के लिए प्रयोग किया जाता था। सनातन सत्य यह है कि सभी मनुष्य एक ही जाति के हैं।

समाजिक विघटन व गोत्र प्रणाली/परंपरा का इतिहास:-

धरती के मूल मनुष्य तो आज भी वानर, चिंपाजी और वनमानुष की श्रेणी में ही आते हैं। माना जाता है कि उनमें से भी कई जातियां तो लुप्त हो गई है; जो अर्धमान जैसी थी। एक विशेष रंग और रूप के मनुष्यों ने अपनी रंग और सौंदर्यता को बरकरार रखने के लिए दूसरे मनुष्यों से रोटी-बेटी के कभी संबंध नहीं बनाए। यह संबंध नहीं बनाना ही समाज में फर्क पैदा करते गया। इस तरह समाज दो भागों में विभक्त हो गया। फिर जिन मनुष्यों ने अपने समूह से निकलकर दूसरे समूह से संबंध बनाए, उनको समाज और क्षेत्र से बहिष्कृत कर दिया गया। इस तरह समाज में तीन भाग हो गए। इससे समाज में फर्क बढ़ता रहा तो संघर्ष भी बढ़ता गया। एक तरफ वे लोग थे, जो खुद को श्रेष्ठ मानते थे और दूसरी तरफ वे लोग थे, जो खुद को अश्रेष्ठ मानने वालों के खिलाफ लड़ते थे और तीसरी ओर वे लोग थे; जिन्होंने श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ की दीवार को तोड़कर एक नए समाज की रचना की और इस तरह क्षेत्र विशेष में तीन तरह की सत्ता अस्तित्व में आई। मजेदार बात यह कि जिन्होंने दीवार को तोड़कर एक नए समाज की रचना की थी उन्होंने भी अपने नियम बनाए कि वे समाज से

बाहर जाकर कोई तथाकथित किसी श्रेष्ठ या अश्रेष्ठ से संबंध न बनाएं। बस, इसी तरह 3 से 30 और फिर 1530 होते गए (भारत वर्ष में कूर्मियों के 1530 उपजातियाँ हैं)। ऐसे समय में शुद्धता के प्रति समाजों में और कट्टरता बढ़ने लगी। लेकिन इन सबके बीच एक नियम काम का और वह था 'गोत्रज' प्रणाली ।

गोत्र रखने का पहला कारण :- गोत्र पहले सामाजिक एकता का आधार था, लेकिन अब धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा है। गोत्र क्यों जरूरी है? यह इसलिए कि एक ही कुल से कोई ब्राम्हणी कार्य करता था तो कोई क्षत्रिय, तो कोई वैश्य और कोई शूद्र कर्म करता था। ऐसे में गोत्र से ही उसकी पहचान होती थी। अब आप स्वयं चिन्तन कीजिए कि क्या कौरव और पांडव क्षत्रिय थे? क्या वाल्मीकि ब्राम्हण थे? वर्तमान युग के हिसाब से कृष्ण कौन थे? यह पक्के तौर पर कहा जा सकता है कि हमारे ऋषि-मुनि वर्तमान में प्रचलित किसी भी वर्ण या जाति के नहीं थे। पुराण तब लिखे गए जबकि जाति और वर्ण का बोलबाला था। पहले तो ऐसा था कि क्षत्रिय और ब्राम्हण आपस में विवाह करते थे, लेकिन गोत्र देखकरऔर यदि क्षत्रिय का गोत्र भी भारद्वाज और ब्राम्हण का गोत्र भी भारद्वाज होता था तो यह विवाह नहीं होता था, क्योंकि ये दोनों ही भारद्वाज ऋषि की संतानें थी। पहले ये चार वर्ण रंग पर आधारित थे फिर कर्म पर और बौद्धकाल में ये जाति पर आधारित हो गए। जब से ये जाति पर आधारित हुए हैं समाज का पतन होना शुरू हो गया।

गोत्र रखने का दूसरा कारण :- गोत्र को शुरुआत से ही बहुत महत्व दिया जाता रहा है। बहुत से समाज ऐसे हैं, जो गोत्र देखकर ही विवाह करते हैं। आपने विज्ञान गुणसूत्र (Chromosome) के बारे में पढ़ा ही होगा। गुणसूत्र का अर्थ है; वह सूत्र जैसी संरचना, जो संतति में माता-पिता के गुण पहुंचाने का कार्य करती है। गुणसूत्र की संरचना में दो पदार्थ विशेषत: सम्मिलित रहते हैं-(1) डी-आक्सीराईबोन्यूक्लिइक अम्ल (De-oxryibonucleic acid) या डीएनए (DNA), तथा (2) हिस्टोन (Histone) नामक एक प्रकार का प्रोटीन; जिसकी व्याख्या बहुत विस्तृत है। सामान्यत: प्रत्येक जोड़े में एक गुणसूत्र माता से तथा एक गुणसूत्र पिता से आता है। इस तरह प्रत्येक कोशिका में कुल 46 गुणसूत्र होते हैं; जिसमें 23 माता व 23 पिता से आते हैं। अत: कुल जोड़े 23 है। इन 23 में से एक जोड़ा लिंग गुणसूत्र कहलाता है; जो होने वाली संतान का लिंग निर्धारण करता है अर्थात 'पुत्र' होगा या 'पुत्री'। यदि इस एक जोड़े में गुणसूत्र XX हो तो संतान 'पुत्री' होगी और यदि XY हो तो संतान 'पुत्र' होगा। यदि दोनों में X समान है, जो माता द्वारा मिलता है और शेष रहा वो पिता से मिलता है। अब यदि पिता से प्राप्त गुणसूत्र X तो XX मिलकर 'स्त्रीलिंग' निर्धारित करेंगे और यदि पिता से प्राप्त Yहो तो 'पुल्लिंग' निर्धारित करेंगे। इस प्रकार X पुत्री के लिए व Y पुत्र के लिए होता है। अत: पुत्र-पुत्री का उत्पन्न होना माता पर नहीं, पूर्णतया पिता से प्राप्त होने वाले X अथवा Y गुणसूत्र पर निर्भर होता है अर्थात महत्वपूर्ण Y गुणसूत्र हुआ, क्योंकि Y गुणसूत्र के विषय में हम निश्चिंत हैं कि यह पुत्र में केवल पिता से ही आया है। बस इसी गुणसूत्र का पता लगाना ही 'गौत्र प्रणाली' का एकमात्र उदेश्य था । हमारे ऋषियों ने इस वैज्ञानिक पद्धति को पूर्व में ही जान लिये थे।

वैज्ञानिक कहते हैं कि गुणसूत्रों के बदलाव से कई तरह की बीमारियों का विकास होता है। इसलिए विवाह के दौरान जहां गोत्र देखा जाता है; वहीं ज्योतिष पद्धति अनुसार गुणों का मिलान भी होता है। आज भी समगोत्री विवाह वर्जित माना गया है। इसके अलावा पुराणों में स्त्रियों की कोई जाति या वर्ण नहीं होने की व्याख्या मिलते है।

कूर्मि शब्द का अर्थ एवं व्याख्या : -

1. कूर्मि शब्द संस्कृत के कूर्म धातु से बना है; जिसका अर्थ कू+रमी। कू अर्थात् भूमि, पृथ्वी तथा रमी अर्थात् रमन करने वाला अथवा भूमिपति/राजा। कूर्मि वह जाति का द्योतक है, जिसका कर्मक्षेत्र भूमि है। कूर्मि समुदाय द्वारा लिखे जाने वाले शब्द के संबंध में निम्नानुसार तथ्य परख बाते है:-

2. कूर्मि- कु अर्थात पृथ्वी और उर्मि अर्थात गोद। इस प्रकार कूर्मि शब्द से तात्पर्य है पृथ्वी की गोद में पलने वाला या पृथ्वीपुत्र। कहा भी गया है- भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।

3. कूरम-कू अर्थात पृथ्वी और रम अर्थात पति या बल्लभ। अत: कूरम शब्द का अर्थ है भूपति या पृथ्वीपति जो कि क्षत्रिय शब्द का पर्यायवाची है। तात्पर्य है- क्षेत्रात् रमेत स: क्षत्रिय:।

4. व्याकरण की दृष्टि से कूर्मि शष्द में इनि (इन्) प्रत्यय लगाने से ''कूर्मिन'' शब्द बनता है। कूर्मिन से प्रथमा विभक्ति के एक वचन में पुल्लिंग कूर्मि शब्द बनता है, जो कि अत्यंत प्राचिन तत्सम रूप है। कालान्तर में कूर्मि का अपभ्रंश अर्थात् तद्भव रूप या बोलचाल में कुर्मी, कुरमी, कुण्बी, कुनबी, कुडमी, कालबी होता गया। बोलचाल व प्रचलन में आने के कारण शासकीय दस्तावेज में भी कुरमी, कुर्मी, कुरमी, कुण्बी, कुनबी, कुडमी, कालबी आदि शब्द प्रयोग होने लगा।

अत: कूर्मि शब्द व्याकरण सम्यक तत्सम रूप है और उसका अपभ्रंश अर्थात् तद्भव रूप या बोलचाल में कुर्मी, कुरमी, कुण्बी, कुनबी, कुडमी, कालबी शब्द है। कूर्मि का शाब्दिक अर्थ है- कर्मशील, पराक्रमी। तुवि कूर्मि कार अर्थात अत्यन्त कार्यकुशल, महान पराक्रमी, महान कर्मयोगी। इस प्रकार महान कूर्मि कर्मयोगी है और वह स्तुति, सत्कार तथा आह्वान के योग्य है।

जाति विभाजन पश्चात कूर्मि जाति/समाज से संबंधित प्रमुख अवधारणाएँ :-

कुरमी जाति अति प्राचीन जाति है। दरअसल यह सभी भारतीय जातियों की जननी है, जैसे संस्कृत को सभी भारतीय भाषाओं की जननी कहा गया है। कुरमी समुदाय आदिकाल से चला आ रहा वह कृषक समाज है, जो भिन्न-भिन्न दौर से गुजरता हुआ, काल-चक्र के अनगिनत उतार-चढ़ाव देखता हुआ तथा परिस्थितियों से अनवरत जूझता रहा। इन आदि कृषकों ने क्षत्रित्व/राजसी जीवन प्रणाली तजकर अपने कुटुम्ब परिवारों के साथ ग्राम बसाकर एक स्थान पर जम कर रहना प्रारम्भ किये। इन परिवारों को कुटुम्ब कहा जाता था और परिवार के सदस्यों की जाति-बोधक संज्ञा कुटुम्बिन बन गयी। कालान्तर में कुनबी समुदाय देश में अन्यान्य क्षेत्रों में जहाँ अन्य लोग बसे, पहुंचे व कृषि कार्य को अपनाये रखा और स्थानान्तरण के कारण भाषा भेद से प्रभावित होकर उनका जाति-बोधक नाम कूर्मि, कुर्मी, कुरमी, कुनवी, कण्वी, कणयी, कुरमी, कुलमी, कुलवी, कुम्मा,

कावू, कूर्मा, कोमरी, आदि होता चला गया। वर्तमान कुरमी और कुनवी शब्द प्राचीन कुटम्बिन शब्द के अपभ्रंश है। हिन्दी भाषी क्षेत्र के प्रमुख कुर्मी कुल:-चन्देल, चन्द्रनाहु, धमैला, अवधिया, पाटनवार, कोचैसा, मनवा, दिल्लीवार, बैसवार, गंगवार, तेलंग, घोड़चढ़े, दोजवार, क्षत्रिय, सवान, सोनवान, सैंभवार, कनुक, कटियार, रमैया, गौहाई, समसवार, जयसवार, बड़गैहा, सिंगरौल, गभेल, गहवई, तिरहुती, चन्द्रौल, कनौजिया, राजवाड़े, सराठे, श्रेष्ठी, मतालिया, देशहा, कुड़मी, मधुरवार, बड़वार, शंखवार, टिंडवार, सतवाड़ा, गौर, उसरेटे, सिंगौर, सनोढ़िया, निरंजन, कैवर्त, अथरिया, खरेविन्द, गुजराती, यदुवंशी, पटेल, ठाकुर, राठौर, परिहार, गहरवार, शिरंगा, चन्द्रा इत्यादि है।

कूर्मि क्षत्रिय वे लोग थे जो आम समय में किसान के रूप कृषि कार्य करते थे तथा वे प्रजापालक ही थे क्योंकि वे अन्न उपजाते थे; जिससे सभी का भरण-पोषण होता था। कृषि कार्य के कारण इनकी शारीरिक मेहनत अधिक होती थी और शरीर बलशाली होता था तथा किसी आक्रमण के समय ये सेना में भूमिका निभा कर अपने राज्य की रक्षा करते थे। इनका ही सरदार राजा हुआ करते थे। ये किसी भी जगह कुनबा बना कर एक साथ रहते थे इसलिए कुनबी कहलाते थे; जो कालान्तर में अपभ्रंषित होकर कुर्मी/ कूर्मि कहलाए । वर्ण व्यवस्था के समय जो छत्र (हथियार) उठाकर लड़ाई किए वो स्वाभविक रूप से छत्रिय (लड़ाका, राजा के सेना का हिस्सा) कहलाता था। हमारे पूर्वज वर्ण काल में सेना के हिस्सा थे अर्थात राजाओं के सेना में योग्यतानुसार विभिन्न पदों पर सेना के कमान सम्हालते थे बाद में शांति काल में उनका कार्यकुशलता मेहनत, ईमानदारी, जांबाजी, जुझारूपन से प्रभावित होकर उनको महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपा गया; वो है अन्न उत्पादन का। इस प्रकार विश्राम के समय में राजा के सरहद के अंदर तमाम कृषि भूमि पर कृषि कार्य का संचालन हमारे पूर्वजों के द्वारा होते थे और जो अन्न पैदा करके, राजकोष में जमा करते थे।

अत: भिन्न भाषा क्षेत्रो में किसान जातियों के पुंज में अलग-अलग जातिया हैं। एक जाति पुंज के अंतर्गत आने वाली इन जातियों की भिन्न-भिन्न उत्पत्ति हैं तथा इनमे अधिकांश के किसी क्षेत्र में आबाद होने के काल भी भिन्न-भिन्न हैं। कुनबी अथवा कुर्मी जाति पुंज के अंतर्गत आने वाली अधिकांश जातिया भारतीय अनुसूचित जनजातिया की तरह प्रोटो-ओस्ट्रोलोइड नस्ल की हैं। प्रोटो-ओस्ट्रोलोइड मूल के लोग मध्य कद काठी के श्याम वर्ण के लोग हैं। अधिकांश भारतीय अनुसूचित जनजातिया भी प्रोटो-ओस्ट्रोलोइड नस्ल की हैं, जैसे- भील, शबर, संथाल आदि।

कूर्मि समाज का ऐतिहासिक प्रमाण

कूर्मि जाति का इतिहास उतना ही पुरातन है, जितना कि मानव जाति। महाभारत, आदिपर्व 65/11 में ''कश्यपातु तु इमा प्रजा:।'' अर्थात कूर्म कश्यप मानव जाति का आदि पुरूष था। सम्पूर्ण प्रजाएँ कूर्म कश्यप से ही उत्पन्न कहा गया है। अत: कूर्म कश्यप को सम्पूर्ण मानव जाति का पूर्वज माना गया है। संसार की सारी ही जातियाँ कूर्म-कश्यप से उत्पन्न हुई हैं, परन्तु वे देश काल और परिस्थितियों के कारण अपने मूल पुरूष को भूल गये हैं। लेकिन कूर्मि जाति, आज भी अपने आदि

पुरूष को गौरव के साथ नाम धारण करके उसकी कीर्ति को अमर किये हुए हैं। कूर्म कश्यप की सन्तान उस आदि पूर्वज के नाम पर स्वयं को कूर्मि, कुर्मी, कुर्मवंशी, कण्वी, कश्यप, कश्यपगोत्री, कापु, कापेचार, कुड़मी आदि मानते और कहते हैं।

सृष्टि के आदिकाल में ''कूर्म कश्यप'' ने सृष्टि प्रारम्भ किया और तमसावृत वाष्पी वातारण में अभेद्य अंधकार और अपार तरल सलिल के भीतर प्रविष्ठ हो उत्पत्ति के उपयुक्त उपादानों को संग्लन किया, जिससे क्रमशः पृथ्वी का ठोस रूप में प्रादुर्भाव हुआ और उस पर प्रजोत्पत्ति हुई। कूर्म कश्यप की संतानों ने अपने जनक से पूछा कि वे पृथ्वी पर किस नाम से जाने जायेंगे और उनका क्या काम होगा। कूर्म कश्यप ने अपनी संतानों को पृथ्वी रमण करने और दोहन करने का काम सौंपा और कहा कि चूँकि तुम्हारा काम पृथ्वी पर रमण करने का है, इसलिए तुम कूर्मि नाम से जाने और पहचाने जाओगे। ***'कू'*** का अर्थ पृथ्वी होता है और ***'रमी'*** का अर्थ रमण करने वाला अर्थात पृथ्वी पर रमण करने वाला ही कूर्मि, कुर्मी या कुरमी, कुलमी कहलाता है। कूर्म अर्थात पृथ्वीदाता, भूमिपुत्र जिसका कर्म (क्षेत्र) भूमि हो, कृषि हो-कृषक कहलाता है। व्याकरण की दृष्टि से कूर्म शब्द में इनि (इन्) प्रत्यय लगाने से कूर्मिन शब्द बनता है। कूर्मिन से प्रथम विभक्ति के एक वचन में पुल्लिंग 'कूर्मि' 'कुर्मी' शब्द बनता है, जो अत्यन्त प्राचीन शब्द है। कूर्म शब्द का अर्थ स्वर्ग, पृथ्वी ,रस और प्राण इत्यादि होता है। अतः कूर्मि शब्द का अर्थ हुआ अत्यन्त पराक्रमी, तेजस्वी, प्राणवान, बलवान, पृथ्वीपति (भूपति या राजा)। स्पष्ट है कि ये सभी गुण एक क्षत्रिय के हैं, जिसकी प्राचीनता का प्रमाण वेद और पुराणों में भी अनेक मन्त्रों से मिलता है। कूर्मि इन्द्रवाची है। कूर्म, कश्यप और ब्रह्म तीनों एक ही है, और वे ही सृष्टि के मूल निर्माता हैं। वेदशास्त्रों के अनुसार कूर्म का अर्थ सूर्य, इन्द्र तथा कश्यप होता है। कूर्मि शब्द का अवतरण कूर्म शब्द से हुआ है। अतः कूर्म, कश्यप और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है और वे ही मानव जाति के आदि पुरूष थे।

शतपथ ब्राम्हण 7/5/1/5 में भी कहा गया है कि- ***''स यत्कूर्मो नाम एतदै रूपं कृत्वा प्रजापतिः प्रजा असृजत यदसृजत। करोत्तंद्यद करोत्तस्मात्कूर्मः कश्यपो वै कूर्मस्तस्मादाहुः सर्वाः प्रजाः काश्यप्य इति।''***

अर्थात् ''उस सृष्टिकर्ता का नाम कूर्म है। कूर्म का रूप धारण करके ही प्रजापति ने सम्पूर्ण प्रजाओं का सृजन किया। सृष्टि का सृजन करने के कारण ही उसे कूर्म कहा जाता है। कश्यप ही कूर्म हैं। इसी कारण समस्त प्रजाएँ कश्यप अर्थात् कश्यप से उत्पन्न कही जाती है।''

ऋग्वेद 8/16/8 में कहा गया है कि -

''स स्तोभ्यः स हव्य सत्वः सत्वा। तुवि कूर्मिः एकश्चित् सत्रभि भूति।।''

अर्थात् ''महान कूर्मि कर्मयोगी है और वह स्तुति सत्कार तथा आह्वान के योग्य होता है, वह सत्य स्वरूप और महाबली होता है। वह अकेले भी विघ्न बाधाओं और शत्रु समूहों से कभी पराजित नहीं होता - सदा विजयी होता है।

कूर्मि प्रागैतिहासिक काल से है, तब तक तो वर्ण-व्यवस्था अनुसार समाज का विभाजन

भी नहीं हुआ था, तब समाज में समता थी। कूर्मियों का अतीत प्रागवैदिक काल से, वैदिक काल और उससे पीछे इधर बौद्ध काल तक बड़ा उत्कृष्ट तथा शानदार रहा है। बौद्धकालीन भारत को पुनः सनातनी ढाँचे में बदलने में सामाजिक आपाधापी मची, जिससे बहुत से जातियों को कट्टर पुरोहितवाद का कोप भाजन बनना पड़ा। ऐसे लोगों को किसी काल में समाज का सर्वे -सर्वा बनाने का कार्य किया गया,जिन्होंने ब्राम्हणों को श्रेष्ठ माना और उनके अच्छे, बुरे आदेशों का पालन करते रहे। मध्यकालीन भारत में विशेष रूप से राजपूतों की मदद से ब्राम्हणों ने वैमनस्य तथा स्वार्थवश उनके वर्चस्व को अस्वीकार्य करने वाली अनेक जातियों को वर्णच्युत तक करने का कुत्सित प्रयास किया, जिसमें उन्हें अच्छी सफलता भी मिली। इसी काल में अन्य प्राचीन क्षत्रिय जातियों के साथ ही कूर्मियों के संबध में भी अनेक भ्रान्तियाँ फैलाई गई।

जिस समय संसार की अन्य जातियाँ सभ्यता की प्राचीन अवस्था में थी, उस समय भारत में कूर्मि क्षत्रिय महान साम्राज्यों के स्वामी थे तथा वे कला और साहित्य के संरक्षक थे। विश्व में ऐसी कोई भी अन्य जाति नहीं, जिसने इतने लम्बे समय से क्षत्रिय धर्म का मनसा, वाचा और कर्मणा पालन करता आ रहा हो। लेकिन सभी क्षत्रिय कूर्मि नहीं हैं, जबकि सभी कूर्मि जाति के लोग निःसन्देह क्षत्रिय हैं। कूर्मि मूल क्षत्रिय जाति है जो वैदिक काल से ही कूर्मि जाति को स्थिर जीवी में परिणित किया है। लोग देश, काल और परिस्थितियों के कारण अपने मूल पुरूष कूर्म कश्यप को छोड़ते चले गये हैं। लेकिन कूर्मि या कूर्मी जाति के लोग आज भी अपने आदि पुरूष को गौरव के साथ धारण करके उसकी कीर्ति को अमर किये हुए हैं।

कूर्म-कश्यप की कीर्ति महान गोत्र प्रवर्तक के रूप में भी अमर है। महाभारत, शांति-पर्व 296/17, **''मूल गोत्राणि चत्वरी सकुत्पन्नानि भारत। अंगिरा कश्यपश्चैव वसिष्ठो भृगरेव च।।''** के अनुसार आरम्भ में अंगिरा, कश्यप, वशिष्ठ और भृगु नामक चार ऋषि ही कूल गोत्र प्रवर्तक थे, और-शेष गोत्रों के प्रवर्तक बाद में हुए। कश्यप चूँकि मानव जाति के आदि पुरूष थे, अतः जिस व्यक्ति को अपने गोत्र का ज्ञान नहीं होता वह भी बिना किसी संकोच के कश्यप को ही अपना गोत्र प्रवर्तक मानकर कश्यप गोत्र रख लेता है, क्योंकि वे सभी के पूर्वज ही हैं। आज भी कश्यप गोत्र सर्वाधिक लोकप्रिय और बड़ा है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अति प्राचीन काल में उसी महान कूर्म कश्यप के वंशज कूर्मवंशी कहलाए। अतः कूर्मि निःसन्देह क्षत्रिय हैं। कूर्मि शब्द का अपभ्रंश कालान्तर एवं स्थानांतरण द्वारा कुर्मी, कुरमी, कुण्वी, कनवी, कुडमी, कालवी आदि होता गया। कूर्मि शब्द का अस्तित्व वेद और पुराणों में अनेक मन्त्रों में मिलता है। देवराज इन्द्र को तुवि कूर्मि अथवा महान कूर्मि वेद के अनेक मंन्त्रों में कहा गया है। कूर्मि ऋषि तथा इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी भी वेद के अनेक मन्त्रों की दृष्टा एवं प्रकटकर्ता रही है ।

सूर्यवंश या कूर्मवंश ही प्रमुख क्षत्रिय वंश है। समूचे भारत में इसके अनेक कुल और वंश आज कूर्मि जाति के कुलों और वंशों के रूप में मिलते हैं। कालान्तर में किसी प्रसिद्ध राजा या ऋषि आदि के नाम पर भी कुछ कूर्मि लोग अपनी वंश परम्परा मानते हैं; किन्तु समस्त कूर्मि जाति का

उद्भव मुख्य रूप से कूर्मवंश या सूर्यवंश से होने के कारण कूर्मि जाति अपने को कूर्मवंशी कहती है। जिस प्रकार कुरू के वंशज कौरव, पाण्डु के वंशज पाण्डव तथा यदु के वंशज यादव कहलाये, उसी प्रकार महर्षि कूर्म के वंशज कौर्मि के नाम से विख्यात हुए। वर्तमान समय में कूर्मि, कुटुम्बी, कुनबी, कुलंबी आदि उसी के ही अपभ्रंश रूप हैं। महर्षि कूर्म के वंशज कूर्मवंशीय क्षत्रिय के नाम से जाने जाते हैं। बाम्बे गजेटियर बेलगाम जिल्द-21 के अनुसार कुनबी (कुर्मी) लोगों के कुल सम्बन्धी नाम 292 हैं। सम्पूर्ण संख्या में से 102 की उत्पत्ति चन्द्र वंश से, 78 की उत्पत्ति सूर्य वंश से तथा 81 की उत्पत्ति ब्रम्ह वंश से मानी जाती है। शेष 31 कुलों के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उनका सम्बन्ध विविध वंशों से है।

महर्षि पंतजलि ने व्याकरण महाभाष्य (1.1.1) में 'गौ' शब्द का उदाहरण देकर बतलाया है कि किस प्रकार एक मूल शब्द अपभ्रंश के कारण अनेक रूप धारण कर लेता है। मूलत: यह कूर्मि क्षत्रिय जाति उस सभ्यता की जनक है; जिसने कृषि का आविष्कार करके उसकी गति की और आर्यो को यायावर (घुमक्कड़) जीवन की अवस्था से स्थिर जीवन शैली वाली श्रेष्ठ और सुसंस्कृत जाति के रूप में परिणित किया। आर्यो के पूज्यतम देवराज इन्द्र थे, जिन्हें अनेक वैदिक मंत्रों में 'तुवि कूर्मि' अर्थात महान पराक्रमी कर्मयोगी कहा गया है (ऋग्वेद, 3.10.3)।

कूर्मि का शाब्दिक अर्थ है- कर्मशील, पराक्रमी। तुवि कूर्मि का अर्थ है- अत्यन्त कार्यकुशल, महान पराक्रमी, महान कर्मयोगी। महान कूर्मि कर्मयोगी है और वह स्तुति, सत्कार तथा आह्वान के योग्य है। वह सत्यस्वरूप और महाबली है। वह अकेले भी विध्नबाधाओं और शत्रुसमूहों से कभी भी पराजित नहीं होता, सदैव विजयी होता है (ऋग्वेद, 8.16.8)।

वैदिक कालीन सुप्रसिद्ध मनीषी महर्षि कूर्म की वंशधर कूर्मवंशी क्षत्रिय जाति भारत की ही नहीं अपितु विश्व की प्राचीनतम विशुद्ध क्षत्रिय जाति है। कुरमी का शाब्दिक अर्थ भी सार्थक है। कु अर्थात पृथ्वी, रमी अर्थात रमी हुई या संलग्न। कुरमी अर्थात वह व्यक्ति या जाति जिसका कर्मक्षेत्र भूमि है।

ऐतिहासिक प्रमाणों से यह तथ्य उजागर होता है कि कूर्मि जाति के पूर्वज उच्च कोटि के विशुद्ध पराक्रमी तथा शूरवीर क्षत्रिय थे। कूर्मि जाति विशुद्ध क्षत्रिय वर्ण की है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। कूर्मि जाति के आदि पूर्वज महर्षि कूर्म क्षत्रिय थे। अत: उनके वंशजों का क्षत्रित्व स्वयं सिद्ध है (लघु नारदीय उपपुराण, चन्द्रवंशीय राजर्षि वर्णन, श्लोक 41 और 56)।

यह अप्रतीम, अद्वितीय एवं वज्रबाहु महान कूर्मि सनातन काल से जगत को जीवनोपयोगी पदार्थ निश्चित तथा निर्बाध रूप से प्रदान करता आ रहा है (ऋग्वेद, 8.2.31)।

कूर्मि का जीवन कर्मशीलता, साहस, संग्राम, संघर्ष, आशा, उत्साह, उमंग तथा उल्लास का होता है। वह साहस के साथ संकटों का सामना करता है। वह संसार में परिस्थितियों का कभी दास नहीं बनता, अपितु उनका स्वामी बनकर जीवन को ज्योतिर्मय बना लेने में समर्थ होता है। वह मंगलमयी, आशामयी, उदात्त भावनाओं का केन्द्र है। वह अपने चारों ओर, न केवल अपनी जाति में,

न केवल अपने देश या राष्ट्र में, न केवल पृथ्वी पर, अपितु समस्त विश्व में सुख, शान्ति, सौमनस्य, सौहार्द तथा प्रकाश का साम्राज्य चाहता है। उसका दृष्टिकोण अत्यधिक विशाल होता है (ऋग्वेद, 6.52.5)।

बृहत् हिन्दी कोश (सम्पादक कालिका प्रसाद, ज्ञानमण्डल, वाराणसी, पृष्ठ-303) में कूर्म शब्द के अर्थ हैं- कूर्म- विष्णु के दस अवतारों में से दूसरा कच्छपावतार, कूर्मक्षेत्र- एक हिन्दू तीर्थ, कूर्म पुराण- 18 पुराणों में से एक, जिसमें कूर्मावतार की कथा है। कूर्म कश्यप चूंकि प्रजापालक और सृष्टा थे, अत: उन्हें प्रजापति भी कहा गया है (शतपथ ब्राम्हण, 7.5.1.5)।

कूर्म शब्द इतना व्यापक हुआ कि आकाश और पृथ्वी का नाम ही कूर्म पड़ गया (यजुर्वेद, 24.34 और शतपथ ब्राम्हण, 7.5.1.5)।

कूर्मि- कु अर्थात पृथ्वी और उर्मि अर्थात गोद। इस प्रकार कूर्मि शब्द से तात्पर्य है पृथ्वी की गोद में पलने वाला या पृथ्वीपुत्र। कहा भी गया है- भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। कूरम- कु अर्थात पृथ्वी और रम अर्थात पति या बल्लभ। अत: कूरम शब्द का अर्थ है भूपति या पृथ्वीपति जो कि क्षत्रिय शब्द का पर्यायवाची है। कहा गया है- क्षेत्रात् रमेत स: क्षत्रिय:।

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका (चौदहवां संस्करण, 1768 ई. जिल्द-13, पृष्ठ-517) में कुनबी जाति के बारे में कहा गया है- कुनबी, महान हिन्दू कृषक जाति है, जो मुख्यत: पश्चिमी भारत में पायी जाती है। यह मद्रास के तेलगू प्रदेश के कापू, बेलगाम के कुलबी, दक्षिण के कुलम्बी, दक्षिणी कोकण के कुलवदी, गुजरात के कणबी तथा भड़ोच के पाटीदारों के समरूप है। कुनबियों में विधवा पुनर्विवाह तथा बहुपत्नी प्रथा को सामाजिक स्वीकृति है; किन्तु बहुपत्नि प्रथा बहुत कम व्यवहार में है। वर्षाऋतु के मध्य में मनाया जाने वाला 'पोला' कूर्मियों का प्रमुख त्योहार है। इसमें वे हल-बैलों का जुलुस निकालते हैं। नृवंशीय दृष्टि से महरट्टा (मराठा) तथा कृषिकर्मी कुनबी समान हैं। दोनों में ही विशिष्ट मौलिक पैतृक गुण हैं। कुनबी (गृहस्थ वैदिकोत्तर संस्कृत कुटुम्बिक; जो आदिम शब्द का संस्कृत रूप हो सकता है) पश्चिमी भारत की महान कृषक जाति है। उत्तर में, जहाँ गंगा के अगल-बगल तथा उसके दक्षिण में यह जाति अधिक संख्या में है, वहॉ पर कुनबी नाम कुरमी हो जाता है।

वेदों के भाष्यकाराचार्य 'कूर्म' तथा 'कूर्मि' शब्दों की व्याकरण सम्मत व्याख्या करते हुए लिखते हैं- कूर्म: (रसो वीर्य तेजो वा) अस्ति अस्य इति कूर्मी अर्थात रसवान, वीर्यवान, तेजवान कूर्मी। जिसके पास जीवनरस, वीर्यबल तथा तेजस्विता रहती है, वही कूर्मि है। कूर्म: (प्रप्राणी बलं क्षत्रं राष्ट्रं वा) अस्ति अस्य इति कूर्मी अर्थात प्राणवान, बलवान, क्षत्रिय (क्षत्रपति), राष्ट्री (राष्ट्रपति) कूर्मी। जिसके अधिपत्य में प्रप्राण, बल, क्षत्र (क्षत्रियत्व अथवा राष्ट्रपतित्व) है, वही कूर्मि है। कूर्म: (भारतवर्ष देशो) अस्ति अस्य इति कूर्मी अर्थात कूर्म नामक भारतवर्ष जिसके आधिपत्य में है, वही कूर्मि है।

कर्मशीलता और दूरदर्शिता के बल पर ही परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना की, इसलिए उसे 'कूर्म' और 'कश्यप' कहा जाता है। 'कूर्म' का शाब्दिक अर्थ 'कर्मशील' और 'कश्यप' का शाब्दिक

अर्थ 'दृष्टा' है। कर्म और ज्ञान दोनों की समन्वित शक्तियों के बल पर अभी भी सृष्टि का विकास हो रहा है। सृष्टिकर्ता को कूर्म कहा जाता है क्योंकि उसमें श्रेष्ठ कर्मशीलता और पराक्रम है। साथ ही वह महान ज्ञानी, सर्वदृष्टा और सूक्ष्मदर्शी है, इसलिए उसे कश्यप भी कहा जाता है। इस प्रकार कूर्म और कश्यप दोनों एक ही शक्ति के दो पहलू हैं। कश्यप ही कूर्म है और परमेश्वर का ही नाम कश्यप है (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, पृष्ठ-315)।

कश्यप, पश्यक अर्थात सर्वद्रष्टा होता है क्योंकि वह सब कुछ सूक्ष्मता के साथ देख लेता है (तैत्तिरीय अरण्यक, 1.8.8)। उस सृष्टिकर्ता का नाम कूर्म है। कूर्म का रूप धारण करके ही प्रजापति ने सम्पूर्ण प्रजाओं का सृजन किया। सृष्टि का सृजन करने के कारण ही उसे कूर्म कहा जाता है। कश्यप ही कूर्म है। इसी कारण समस्त प्रजाएँ काश्यप्य अर्थात कश्यप से उत्पन्न कही जाती है (शतपथ ब्राम्हण, 7.5.1.5)। सृष्टि और प्रजा का पालनकर्ता होने के कारण ही कूर्म को प्रजापति कहा गया है। कूर्म के अत्यन्त तेजस्वी होने के कारण उस आदित्य अर्थात सूर्य भी कहा गया है (शतपथ ब्राम्हण, 7.5.1.6)।

कूर्म-कश्यप, मानव जाति का आदि पुरूष था। सम्पूर्ण प्रजाएँ कूर्म-कश्यप से ही उत्पन्न हुई (महाभारत, आदिपर्व, 65.11)। यजुर्वेद में भी उसे प्रजापति और आदित्य दोनों कहा गया है (यजुर्वेद, 13.30 का महीधर भाष्य)। राजर्षि कूर्म सुप्रसिद्ध वैदिक ऋषि गृत्समद के पुत्र थे (ऋग्वेद, 1.27)। अति प्राचीन काल में उसी महान ऋषि कूर्म के वंशज कूर्मवंशी कहलाये। चूंकि कूर्म और सूर्य अर्थात आदित्य एक हैं इसलिए उन्हें सूर्यवंशी भी कहा जाता है। संसार की सारी जातियाँ कूर्म-कश्यप से उत्पन्न हुई हैं; परन्तु वे अपने मूल पुरूष को भूल गई हैं। महान गोत्र प्रवर्तक के रूप में कूर्म-कश्यप की कीर्ति अमर है।

'सयः स कूर्मोऽसौस आदित्यः' के अनुसार आदित्य (सूर्य) का नाम कूर्म है। अतः सूर्यवंश, कूर्मवंश का ही नामान्तरण है। उपरोक्त वंश संरचना से स्पष्ट है कि वैवस्वत मन्वन्तर के आद्य त्रेता युग के प्रारम्भ में मारीचि कश्यप हुए हैं (वायु पुराण, 6.43)। सम्पूर्ण मानव जाति के आदि पुरूष कूर्म कश्यप अत्यन्त पुरातन काल में विद्यमान थे। महर्षि कश्यप की पत्नी मनुर्भरतवंश के 45वीं पीढ़ी में उत्तानपाद शाखा के प्रजापति दक्ष की पुत्री अदिति थी (बृहद्वेता, 3.57)। इनसे 12 आदित्यों का जन्म हुआ। सबसे बड़े आदित्य वरूण तथा सबसे छोटे आदित्य विवस्वान (सूर्य) थे। इन्हीं विवस्वान या सूर्य से सूर्यवंश चला। विवस्वान के पुत्र मनु, वैवस्वत मनु जिनका मन्वन्तर चल रहा है.....

विभिन्न पुराण, ग्रंथ, साहित्य, दस्तावेज में कूर्मियों के ऐतिहासिक प्रमाण -

रामायण काल में -

कूर्म, कूर्मि - इन्दतु मम दीस्य, मनोभूयः प्रकर्षति ।
यदि हास्य प्रिया ख्यातु न कूर्मि सदृशं प्रियम्।।

रामभक्त हनुमान के लिए भी कूर्मि शब्द विशेषण के रूप में वाल्मीकी रामायण में मिलता है।

श्री राम कहते हैं कि मुझ दीन का मन फिर हनुमान की ओर आकर्षित होता है, क्योंकि प्रिय हित करने वाले हनुमान **कूर्मि** समान प्रिय मुझे और कोई नही है। वाल्मीकी ऋषि ने यहाँ हनुमान को महावीर तथा अन्य गुणों को ध्यान रखकर **कूर्मि** विशेषण से संबोधित किया है ।

हरिवंश पुराण -

हरिवंश पुराण के अध्याय 53 श्लोक 6/7 में रूक्मिनी के स्वयंवर में अतिबलशाली योद्धा के लिए **महाकूर्म** कहा गया है–

जरासंधः सुनीथश्च, दन्त वार्यवान साल्व सौभपतिश्चैव।

महाकूर्मश्च पार्थिक, कथकैशिक मुख्याश्च, नृपाः प्रवरवंशजा ।।

अर्थात् जरासंध, सुनीथ, पराक्रमी दन्तवक्र, साल्व, सौभपति, राजा महाकूर्म (मरूत, कुन्ति, भोज) और श्रेष्ठ वंशोत्पन्न कथ तथा कैशिक आदि राजेमहाराजे रूक्मिनी के स्वयंबर में शामिल हुए।

मार्कण्डेय पुराण-

मार्कण्डेय पुराण के 57/50 में पुलिन्द तथा सुमीन देशों के पश्चात् कुरूमी (कुरूमिन) देश का उल्लेख किया गया है–

पुलिन्दाश्च सुमीनाश्च रूपया : स्वापदै सह। तथा कुरूमिनश्चैव सर्व चैव कठाक्षरा :।

इस श्लोक में प्रयुक्त कुरूमिन शब्द भी कूर्मियों की प्राचीनता का साक्ष्य प्रस्तुत करता है।

कूर्मावतार -

भगवान विष्णु के दशावतारों में प्रथम मत्स्यावतार और दूसरा **कूर्मावतार** कहा गया है। कूर्म भगवान का अवतार उत्तराखंड में हुआ था, इसी से वह भूभाग पुराणों में **कूर्माचल** कहलाया। आजकल इसे कुमाऊँ कहा जाता है। जिस स्थान पर कूर्म भगवान अवतरित हुए थे, उस स्थान का नाम चम्पावत है। वहाँ पर कूर्म भगवान का भी मंदिर है जिसमें उनके चरण चिन्ह शिला पर अंकित है।

राजतरंगिनी एवं नीलमत पुराण में उल्लेख है कि कश्मीर की भूमि पहले जलमग्न थी। ऋषि कश्यप (कूर्म) ने उस जल को सोख लिया था ।

पं भगवदत्त कृत 'भारतवर्ष का इतिहास' द्वितीय संस्करण 1946 पृ. 44 अनुसार कश्यप और कूर्म एक ही शक्ति के द्योतक हैं । अर्थात् दोनों भिन्न रूप में न होकर एक रूपा है– कश्यपो वै कूर्म (श.ब्रा.7/7/1/5)। सागर मंथन के अवसर पर कूर्म–कच्छप का रूप धारण करके जगत का कल्याण व रक्षा करने वाले विष्णु भगवान को इसी कारण 'आदि कूर्म' विशेषण से संबोधित किया जाता है।

अनन्तो वासुकि : शेषो कराहो धरणीधरः। पयः क्षीर विवेकाढ्यो हंसो हैमगिरि स्थितः।।

हयग्रीवो विशालाक्षो हयकर्णो हमाकृतिः । मन्थनो रत्नहारी चं कूर्मोधर धराधरः ।।

–विष्णु सहस्त्रनामं स्तोत्र

भार्गव उप पुराण

उत्तरार्द्ध सूर्यवंशीय राजर्षि वर्णन अध्याय 15 में अंकित–

कूर्मि संज्ञां लभन्ते ते क्षत्रियाः कूर्म संज्ञकाः वंशजा :।

भूमिधारण कर्त्तारस्तुवि कूर्मि यथा दिवि ।।

भार्गव उपपुराण उत्तरार्द्ध सूर्यवंशीय राजर्षि वर्णन अध्याय 15 श्लोक 25,26,27 में वर्णन है–

वीतहव्यो नृपः कौर्मः सूर्यवंशस्य भूषणः। तत्पत्न्यां गृत्समदोऽभूह ह्याम्बिकायां महाबलः।।

तत्पुत्रोनामतः कूर्मो राजर्षि प्रवरः शुभः।मंत्र दृष्टा सदाचारः क्षात्रधर्मपरायण : ।।

तत्पुत्रा विष्मुसेनांद्याः कूर्मवंश विवर्धनाः ।तत्पुत्रैश्च प्रपोत्रैश्च व्याप्तं पण्डलम् ।।

अर्थात् कूर्मवंश में उत्पन्न सूर्यवंश की शोभा बढ़ाने वाला वीतहव्य नामक राजा हुआ। उनकी पत्नी अम्बिका से महाबली गृत्समद उत्पन्न हुए। उनके पुत्र कूर्म नामक अति श्रेष्ठ राजर्षि हुए । वे क्षात्र धर्मपरायण, सदाचारी और मंत्रदृष्टा हुए। कूर्म वंश की समृद्धि करने वाले विष्णु सेना आदि अनेक पुत्र हुए ।उनके पुत्रों और प्रपौत्रों से भू–मण्डल भर गया।

शतपथ ब्राह्मण -

प्राणो वै कूर्मो ! कूर्म को प्राण कहा गया है। इसी ब्राह्मण ग्रंथ में आगे प्राणो वै क्षत्रम् ! प्राण क्षत्र के वाचक रूप में प्रयुक्त है। पुनः इसी ग्रंथ में –

प्राणो वै बलम् ! प्राण, बल का वाचक है ।

''सयः स कूर्मो वयं सौ आदित्यः'' 'वृषा वै कूर्मो योषा साढ़'।

तदानुसार कूर्म, आदित्य सूर्य और वृषा यानी इन्द्र के नाम हैं।

''द्यावा पृथ्वीयो ही कूर्म : '' यानि स्वर्ग (द्यौ) और पृथ्वी का नाम कूर्म है। अब प्रश्न – कूर्म शब्द से कूर्मि कैसे संबंधित है? स्व.देवी प्रसाद सिंह चौधरी द्वारा रचित छत्र प्रभाकर से निम्न समाधान–

कूर्मि शब्द में तदस्यास्ति इति मतुप् अर्थ में संज्ञायांम्न्माभ्याम् (पाणिनी 5/2/137) द्वारा इनी (इन) प्रत्यय लगाने से कूर्मिन शब्द बनता है। फिर सौच (पाणिनी 6/4/13) हलड्याभ्यो, दीर्घात्सुतिस्य पृक्तं हल् (पा.8/1/68) और न लोपः प्रातिपदिक कांतस्य (प्रा.8/2/17) द्वारा कूर्मिन से प्रथमा विभक्ति के एक वचन में कूर्मि शब्द सिद्ध होता है। उक्त विवेचना के उपरांत लेखक द्वारा निम्न निर्णय दर्शित है– कूर्म : (द्यौ स्वर्गो वा) अस्तस्य कूर्म : दिवस्पतिः इन्द्र :।

कूर्मि : (पृथ्वी) अस्तस्य कूर्मि= पृथ्वीपतिः । Lord of the earth/king ।

कूर्म : (रसोविर्यवा) अस्तस्य कूर्मि = रसवान, वीर्यवान ।Spirits, Vigorous ।

कूर्म : (प्राणोबलं छत्रं वा) अस्तस्य कूर्मि = प्राणवान, बलवान, क्षत्रिय, स्ट्रांग, स्टाऊट ।

कूर्मि (प्रतिपादिक कूर्मिन) अति प्राचीन शब्द है और वेद में क्षत्रिय राज इन्द्र की संज्ञा में प्रयुक्त पाया जाता है।

मध्ययुगीन इतिहास

कृषि के आविष्कार के साथ ही कुटुम्ब या परिवार नामक संस्था का आविर्भाव और विकास हुआ; जो आज भी सामाजिक जीवन की महत्वपूर्ण इकाई के रूप में स्थापित है। कुटुम्ब के सदस्य को कुटुम्बिक कहा जाता था। धीरे-धीरे बोलचाल की भाषा में जिस प्रकार ब्राम्हण से बाभन, बम्भन, बाभन आदि शब्द बनते गये, लक्ष्मण से लखन, स्वर्णकार से सोनार, कुम्भकार से कुम्हार शब्द बने। वैसे ही लोक प्रचलन में कुटुम्बी का टु गायब हो गया और कुम्बी, कुरमी, कुणबी, कणवी आदि शब्द प्रचलन में आने लगे। कुटुम्ब को कुल भी कहा जाता था। कुल से कुलम्बी, कुलवदी, कुलमी, कुरमी, कूर्मा, कापू, कम्मा, कूर्मि क्षत्रिय आदि शब्द भारत के विभिन्न क्षेत्रों/ भागों में उच्चारण और प्रयोग भेद से प्रचलित होते गये।

कूर्मि या कुणबी; जिसे हिंदी में 'कूर्मि' व बोल-चाल में कुर्मी कहते है। गुजराती मे कणबी कहते है व झारखंड मे कुडमी कहते है तथा कन्नड/तमिल मे कुडूंबी, कुडूंबर कहते है। कुण का मतलब खेती और बी का मतलब बीज। खेती में बीज बोकर अनाज पैदा करनेवाला समाज कुणबी और धन के अथाह संग्रहाक बनने के कारण धनगर पहचान मिली। गर का मतलब गोदाम नियंत्रक (Store Incharge) छत्रपती शाहूजी महाराज के खुद की दो लडकियों की शादी धनगर समाज में की गई। कूर्मि समुदाय का मुख्यत: व्यवसाय कृषि है; जो अनाज पैदावार कर समाज का भरण-पोषण कर पूरे मानव समुदाय की रक्षा करते है। कृषि कार्य में पशु के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है । अत: कूर्मि समाज सबसे बड़े पशु पालक समाज के रूप में भी जाना जाता है। हम जानते ही है कि समाज में संख्या बढ़ने के साथ अपने- अपने परिवार का भी बटवारा और पहचान भी अलग-अलग हो जाता है। अगर परिवार में सात आठ भाई है और सबकी शादी हो गई तो घर परिवार पृथक-पृथक में बट जाता है; किन्तु वे एक ही पिता के पुत्र है। उसी प्रकार कूर्मि समुदाय के विभिन्न फिरके या उपगोत्र समय के साथ-साथ पृथक-पृथक पहचान से जाने लगे। कूर्मि समाज एक जाति न होकर जीवन जीने की एक वृहद कुनबा या जीवन शैली का व्यापक रूप है। कृषि या जीवन अथवा समाज और राष्ट्र की जरुरत पूरी करने के लिए कूर्मि समाज ने आवश्कतानुसार तथा अपनी कुशलतानुसार व्यवसाय क्षेत्र चुना। किसी को बीज से तेल निकालने की महारत थी तो तेल निकालने का काम किया वह: तेली' कहलाने लगे। किसी ने फुल बागान का काम किया तो वह माली, किसीने पशुपालन का काम किया तो वह धनगर/गडरिया। किसी ने चमड़े का काम किया तो वह चमार, किसीने कपड़ा सिलाई की कुशलता दिखाई व कार्य किया तो वह दर्जी, किसी ने कपड़ा धोने का काम पसंद किया तो वह धोबी, किसी ने इन सारे समाज को धार्मिक कार्यक्रम में सहयोग दिया तो वह पुरोहित, किसी ने धातु से अलंकार की कुशलता दिखाई व काम किया तो सुनार, किसी ने लोहे के औजार बनाने का काम किया तो लुहार/लोहार, किसी ने लकड़ी के औजार बनाने का काम किया तो सुनार/विश्वकर्मा, किसीने भोजनार्थ मछली एवं पानी में नाव चलाने का काम किया तो वह कोली/काधी/नाविक, किसीने मिट्टी के बर्तन औजार बनाने की कुशलता दिखाई व काम किया तो

वह कुम्हार/कुंभार/कसार, किसी ने जंगल में प्रकृति के साथ रहना व संवर्धन का काम किया तो वह आदिवासी, किसी ने ग्रामस्वच्छता को ही राष्ट्रसेवा मानकर कार्य कुशलता व समर्पण दिखाई वह महार / वाल्मिकी समाज बन गया। यह बात अलग है की चालाक लोगों ने इस कार्य को सामाजिक उत्पीडन/अपमानित करने का माध्यम/ जरिया बना दिया।

इस व्यावसायिक निपूणता वाले वर्ग को आर्यो ने जैसे ही सत्ता पर कब्जा किया वैसे इन्हें व्यवसाय के अनुरुप इस व्यवसायिक वर्ग को 'जात' का दर्जा पहचान देकर बड़े पैमाने पर सामाजिक विभाजन कर दिया जिससे माली, तेली का नहीं रहा, धनगर, धोबी का नहीं रहा, कोली, सुनार का नहीं रहा, कुम्हार, लुहार का नहीं रहा इत्यादि। परंतु वस्तुत: यह सारा व्यावसायिक वर्ग मुलत: कुणबी/मराठा या कूर्मि का ही पृथक-पुथक स्वरूप है जो राष्ट्र और समाज की जरुरत पूरी करने के लिए अपनी कुशलता के अनुरुप कार्यक्षेत्र चुना और बाहरी आक्रांताओ ने सतत सत्ता मे नियंत्रण के लिए इन्हें विभाजन के साथ उत्पीड़न के सागर मे डुबो दिए और अब सभी कार्य / व्यवसायिक पहचान के कारण एक दूसरे से अलग-अलग हो गए है तथा अब वे सभी आपस में ऊंच-नीच, छुआ-छूत, फिरका-परस्ती में फसे हुए है। आश्चर्य देखिए कि यह सारा कुलंबीज का कुणबा एक होने के बावजूद परिस्थितियों के चलते आज सुनार, लुहार, चमार, तेली, माली कहलाता है परंतु आपस में एक पहचान, एक जमात मानने को तैयार नहीं....? क्योंकि अनंत पीढ़ियों से जानकारी के अभाव, अज्ञानता, शिक्षा का अभाव के कारण जैसे पेड़ की विभिन्न शाखाएं अपने जड़े ही भूल गये और आंकलन के लिए नजरों की क्षमता तो केवल पेड़ की शाखाओं तक सिमित रह गई एवं जड़ों तक नजरे जा ही नहीं पाती?

इन सारी खेतीहर विभिन्न शाखाओं /जातियों/बिरादरियों को चालाकों ने हजारों जातियों के समूह में विभक्त कर दिया। इन खेतिहर बिरादियों को मुख्यधारा की प्रतिष्ठा से वंचित रखा। अब मानव समाज को तंदुरुस्त करने के लिए धर्म चादर की गुलामी से निकलना होगा। जहॉ-जहॉ इन्सान नहीं पहुंचा, वहॉ-वहॉ कोई मंदिर, मस्जिद तथा देवी-देवता, अल्लाह नहीं पहुंचा और ना उनके प्रतीक/ संकेत/ मूर्ति पहुॅची। जहॉ इन्सान पहुॅचा वहॉ- वहॉ इन्सान ने जैसा चाहा वैसा ईश्वर भगवान के रुप संकेत प्रतीक/ प्रतिमा/मूर्ति बना डाला और आखिर इन्सान ही अपने हाथों से बनी इन प्रतिमाओं/मूर्तिओं पर माथा रखकर पूर्ण अज्ञान पुरुष का साकार दर्शन साबित करने लग गया। मतलब ईश्वर एक नहीं, मानव ने जैसा चाहा वैसा बना दिया। जैसा चाहा, वैसा उसके भोजन और कपड़े, दर्शन, निवास तैयार हो गये और जहॉ इन्सान नहीं पहुंचा वहां इन सबका कोई घर नहीं और ना मूर्तिकार ना पंडे ना पुजारी ना दलाल ना कर्मकांड।

भारत कृषि प्रधान देश है और भारत की किसानी जमात ही असली भारत है। यही कुणबा/ कुणबावा/ कुलंबीज/ कुर्मी/ कूर्मि समाज ही भारत का असली समाज है। सिर्फ इन्हें अपना वजूद, अपनी पहचान का एहसास दिलाने की जरुरत है और इन सब काम के लिए पढ़े-लिखे वर्ग को आगे आना होगा। जब पढ़े- लिखे लोग, शेष समाज को देवालय, धर्मालय के बजाए ग्रंथालय या

योगशाला की तरफ भक्तों को मोड़ेंगे वह दिन भारत का शुभ दिन या अच्छे दिन वाला शुभ संकेत माना जायेगा।

दक्षिण भारतीय कूर्मि : -

कई कम्मा कुलनाम जो 'नेनी' निरूपण के साथ पूरे होते हैं। नायाकुडु/नायडू/नायूनी उपनाम वाले कूर्मि पूर्वज के वंश से हैं। उदाहरण के लिए कुलनाम 'वीरमाचानेनी' की उत्पत्ति 'वीरामाचा नायडू' से हुई थी। अन्य कुलनामों से उन गांवों का संकेत मिलता है; जिनसे उन व्यक्यिों का मूलत: संबंध था। कम्मा समुदाय विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग उपनामों का उपयोग करते थे जैसे कि चौधरी, नायडू, राव और नायकर. तमिलनाडु और दक्षिणी आंध्र प्रदेश में सामान्यत: नायडू का प्रयोग किया जाता है। नायकर उपनाम का प्रयोग कोयम्बटूर जिले के दक्षिणी क्षेत्रों में किया जाता है। हालाकि तेलुगु भाषी कापू, वेलामा और अन्य समुदाय भी तटीय आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में क्रमश: नायडू और नायकर उपनामों का उपयोग करते हैं।

प्रमुख राज्यों के पतन के बाद कूर्मि कम्मा समुदायों ने अपने मार्शल अतीत को विरासत के रूप में आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के बड़े उपजाऊ क्षेत्रों को नियंत्रित किया। अंग्रेजों ने उनकी शोहरत को मान्यता दी और उन्हें ग्राम प्रमुख (तलारी) बना दिया; जिसे कर संग्रह करने वाले चौधरियों के रूप में भी जाना जाता था। भूमि और कृषि के साथ कम्मा समुदायों का संबंध सुविख्यात है। कम्मा समुदायों की मार्शल संबंधी दिलेरी को आधुनिक समय में जमीनों को अनुकूल बनाने के अच्छे कामों में उपयोग के लिए रखा गया था। तेलुगु भाषा में कई ऐसी कहावतें हैं जो कम्मा समुदाय की कृषि के क्षेत्र में अनुकूलता और मिट्टी से उनके भावनात्मक लगाव के बारे में बताते हैं।

उदाहरण के लिए:- कम्मावाणी चेतुलु कट्टिना निलवडु (तेलुगु **కమ్మవానిచేతులుకట్టినానిలవడు**) (आप भले ही कम्मा के हाथों को बाँध दें वह शांत नहीं बैठेगा)

कम्मावारिकी भूमि भयपडुथुण्डी (तेलुगु-**కమ్మవారికిభూమిభయపడుతుంది**) (धरती कम्मा से डरती है)

एडगर थर्सटन जैसे अंग्रेजी इतिहासकारों और एम.एस. रंधावा जैसे विख्यात कृषि वैज्ञानिकों ने कम्मा किसानों की भावना को सराहा है। त्रिपुरानेनी गोपीचंद द्वारा लिखित एक लघु कथा मामकरम में जमीन और मिट्टी के साथ कम्मा किसानों के भावनात्मक लगाव का गहराई से चित्रण किया गया है।

भारत वर्ष के विभिन्न हिस्सों में निवासरत कूर्मियों के उपनाम की जानकारी

01. छत्तीसगढ़ राज्य

राज्य में कूर्मियों का निवास रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, संभाग के मैदानी भाग में मुख्यत: नदी किनारे सघन जनसंख्या के रूप में है। सरगुजा संभाग में संख्या कम है। छत्तीसगढ़ में कूर्मि उपजातियों में भेद नही है। सभी 24 प्रकार के कूर्मि उपजातियों में अंतर उपजातीय विवाह प्रचलित है। बाहर प्रान्तों के कूर्मि भी यहाँ निवासरत हैं। छत्तीसगढ़ में कूर्मियों की 24 प्रमुख उपजाति निवासरत हैं। समाज की प्रदेश में निवासरत एवं प्रचलित उपनाम की क्षेत्रवार जानकारियाँ निम्नानुसार है :-

कश्यप, कूर्मि, कौशिक, वर्मा, बैस, बैसवाड़े, बैसरा, चन्द्राकर, भारद्वाज, चन्द्रनाहू, चन्द्रा, चन्द्रेश, चन्देल,कुलमित्र,देशमुख, दिल्लीवार, बेलचंदन, महतेल, सुकतेल, हरदेल, भारदीय, गौतम, हरमुख, अमृत, पिपरिया,गहवई, सिंगसार्वा, रायसागर, बघेल, नायक, चन्द्रवंशी, बघमार,परगनिहा, खिचरिया, टिकरिहा, मढ़रिया, धुरंधर, आडिल, सिरमौर, कपूर, बंछोर, पैकरा, बिजौरा, पाटनवार, राजवाड़े, सन्नाट, सनाड्य, सिंगरौल, सिंघरौल, शांडिल्य, हरदेल, भंवर, देशमुख, डोटे, कांकड़े, ठाकरे, पटेल, कश्यप (कुनबी), पटेल, सिंह, सिंगौर, सचान, चन्द्रौल, गहलोत, पटेल एवं पाटीदार प्रमुख हैं ।

02. मध्यप्रदेश- म.प्र. के कूर्मियों में पटेल, कूर्मि, कनवी, मराठा, गौर, कोडरा, ढालवार, झारी, कन्नौजिया, चन्दनहू, गौरिया, मनवा, सिंगरौल, तिरोला, चन्द्रआर्य, उरसेठे, जायसवार, हवेलिया, खैर, पाटीदार,गहोई,दशा,सम्राट आदि हैं। **उपाधियाँ**- पाटीदार, गौर, चौधरी, सिंह, कनौजिया, पटेल, चौरिया, मुकाती, वर्मा, सिंधिया, पवार, भोसले, चन्द्रौल, सिंगौर,मलैया, कटियार,आदि ।

03. महाराष्ट्र -राज्य में प्रचलित मराठों के उपनाम- आंग्रे आंग्रणे, इंगले, कदम, काले, काकड़े, खंडागले, खैर, चालुक्य, गुजर, गायकवाड़, घाटगे, चव्हान, जगताप, जगदले, जाधव, ढमाले, ढवले, ठाकुर, भोवारे, भोगले, मधुरेमहाड़िक, महावर, मोरे, मोहिते, राणे, राऊत, बाघ, लाड, सिलारे, शंखपाल, शिन्दे, शिरके सावन्त, सुरवे, सिसोद, क्षीरसागर, थोटे, थोरात, दलवी, दाभोड़े, पवार, परिहार, पानसरे, पांढर, पिंगले, फाटक, बागवे, बान्डे, भागवत, भोंसले, निकम, देवकान्ते, अहिर राव, धर्मराज, देशमुख आदि ।

04. आंध्र प्रदेश - राज्य में प्रचलित उपनाम कापू,रेड्डी, कम्मा,कूर्मि, कपालू, नायडू ।

05. असम-राज्य में प्रचलित उपनाम चौधरी,महतो कूर्मि लिखते हैं।

06. बिहार -राज्य में प्रचलित उपनाम धानुष्क, धमैला,कोचैसा, जायसवार,अवधिया, चन्दानी,समसवार, पटनवार, चंदेल, रमैया, सेठवार, ढेलकोर, घोड़चरे, सिन्दुरिया, अयोध्या, विग्राहुत। नितिश कुमार मुख्य मंत्री, कूर्मि स्वजातीय हैं। बिहार के कूर्मि मंडल, मड़र, महतो, पटेल, मंहत, राव, रावत, सरकार, सिंह, सिन्हा, प्रसाद, विश्वास, चौधरी, राय, वर्मा, मेहता भी लिखते हैं।

07 दिल्ली – भारत के अन्य राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश आदि से आये हुए कूर्मि जो नौकरी व व्यवसाय करते हुए यहाँ पर निवासरत हैं, जो पटेल, सिंह, गंगवार, जयसवार, वर्मा, सचान, राय, चौधरी, प्रसाद, राऊत एवं कटियार उपनाम लिखते हैं ।

08. गोवा - अधिकांश गोवा के कूर्मि शिव परिवार के एक देवता मल्लिकार्जुन को अपना देवता मानते हैं। गोवा के कूर्मियों को शैव मंदिरों में पुरोहित के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है। **गोवा के उपजाति**– गौड़, वेलिप,गांवकर,गावड़े, कुनबी, कूर्मि आदि हैं।

09. गुजरात - राज्य में निवासरत कूर्मि लोग अंजना,कड़वा,लेवा और मतिया वाले समूह के लोग हैं, यहाँ पर **पाटीदार**– कूर्मियों की उपाधियाँ– पाटीदार, पटेल,अमीन,चौधरी, देसाई एवं संवयार आदि।

10. हरियाणा-राज्य में प्रचलित उपनाम आर्य,चौहान, मेहता, महेला, गोरे, चोपड़े, वर्मा, झोमवाड़े ।

11. झारखण्ड - राज्य में प्रचलित उपनाम के कूर्मि महतो के नाम से जाने जाते हैं। सन् 1931 यहां के कूर्मि आदिवासी की सूची में थे। अब ये पिछड़े वर्ग की सूची 1 में आते हैं। यहॉ की कूर्मि समाज पूजा अनुष्ठान, विवाह,संस्कार,आदि अपने हाथों सम्पन्न करते हैं। सामाजिक परम्परा अनुसार ब्राम्हणों का छुआ नहीं खाते हैं। अनेक शिवालयों में अभी भी कूर्मि लोग ही पुरोहित का कार्य करते हैं। **उपनाम**– महतों, ओहदार, प्रमाणिक, चौधरी, सिंह, मेहता, सिन्हा, समसवार, चंदेल, जायसवार, रमैया एवं धानुक आदि।

12. कर्नाटक – राज्य में वक्कालिंगर कूर्मियों की अधिकता के साथ कापू, कम्मा, रेड्डी, मराठा,कुनबी, गौड़ा, आदि नामों से यहाँ के कूर्मि जाने जाते हैं। राज्य में **उपजाति**– गंगडिकर, गोवे, उप्पिनकोलिंग, स्वल्प, हेमा रेड्डी, अजमार, मालव, मनिग, नामधारी, पंदरू, बोग्गारू, मालेगौड़ा, मसुकुवक्कालिगा, तांडागौड़ा, मेगदा, रोडागारू, हल्लीकार, रेड्डी, कम्मेवार, गोसंगी, राव, नायडू, चौधरी, रमैया, याधव, शिंदे, पवार, सावन्त, घाटगे, चवण, आदि, रखते हैं। राव, उपाधि वाले सभी व्यक्ति कूर्मि नही होते हैं। कर्नाटक के वक्कालिंगर कूर्मि कन्नड़ भाषी हैं।

13. केरल - तत्कालीन ट्रावनकोर रियासत के कूर्मि यहाँ बेल्लाल के नाम से प्रसिद्ध हैं। बेल्लाल जाति के 4 विभाग हैं– (1) टोनड मंडलम् – इर्स वर्ग के लोग उत्तरी बकटि क्षेत्र जिसे प्राचीन काल में पल्लव प्रदेश कहते थे,में रहते हैं। ये लोग मुदाली,रेड्डी,और नय्यर उपनाम लिखते हैं। (2) सोलिया, सोफिया –ये लोग चोल प्रदेश जिसमें अब तन्जोर तथा त्रिचनापल्ली के जिले शामिल है में निवास करते हैं। ये पिल्लई कहे जाते हैं (3) एक उपवर्ग प्राचीनकाल के पांडयन साम्राज्य नाम से प्रसिद्ध क्षेत्र में निवास करता है जिसमें अब पूरा मदुरा तथा तिन्नेवेल्ली जिले शामिल हैं। ये भी पिल्लई उपनाम लगाते हैं। (4) कोंग– ये लोग पुराने समय के कोंग प्रदेश जिसमें अब कोयम्बटूर और सालेम जिले सम्मिलित हैं , में रहते हैं। ये लोग कवंडव कहलाते हैं। कुदुम्बी कूर्मि गोवा से कोची ,केरल में पलायन कर आये। कुदुम्बी समाज का मुख्य पेशा कृषि,मजदूरी, छप्पर छाना तथा मछली मारना है। केरल के कुदुम्बी सन् 1950 तक जनजाति श्रेणी में थे।

14. पश्चिम बंगाल–यहाँ के कूर्मियों के प्रमुख गोत्र कटियार, कोरेबार,हस्तवार,नागनटवर,

केसरिया, शंखवार, कश्यप,डुमरिया, तीरवार, गुलियार, चिलवार, मतवार, इन्दुरिया, हेमरम्या आदि हैं।

15. राजस्थान - कूर्मि समाज की दो मुख्य उपजातियाँ आंजना व पाटीदार मूलरूप से निवास करती हैं। आंजना उपजाति राज्य के जोधपुर, बाड़भेर, पाली सिरोही,जालोर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ जिलों में तथा पाटीदार उपजाति कोटा,टोक, झालावाड़, डूगरपूर,बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ प्रतापपुर तथा सवाई माधोपुर जिलों में निवास करती है।

16. तमिलनाडु- इस प्रदेश में कृषक वर्ग को कापू नाम से संबोधित किया जाता हैं। राज्य में रेड्डी, कम्मा, नायडू,प्रधान उपनाम प्रचलित हैँ

17. उत्तर प्रदेश –यह प्रदेश कूर्मियों का गढ़ माना जाता है। प्रदेश में प्रचलित **उपजातियाँ** फगहरवार, कटियार लोहत, गंगवार, कनौजिया, जादौन, जादुआ ,कटवार,सनवान,उत्तराहा,उत्तम, अंधर, करजवा, उमराव, सिंगरौल, सहजन, उत्तम, सिम्मल, उसरेठी, महेसरी , चन्देल, चन्दावर, चन्द्रावल, झमैया, जड़िया, सकरवार, सिंगरौर, कर्जवा, उत्तराहा, झूरा, अवधिया, बठमा, चन्दाउर, अकरेथिया, तरमाला, नेपाली, भूर, बाच्छल, गंगवार, कटवार, मेवाड़, सखवार, सम्मन, समसोया, समसेयाल, खबास, बिरतिया, चन्द्रधार, कैराती, रावत, ढेलफोरा, धिन्धवार, उत्तराहा।

18. अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह : इस केन्द्रशासित प्रदेश में कूर्मि, पटेल, कश्यप इत्यादि उपनाम प्रचलित है ।

19. हिमाचल प्रदेश **:** इस राज्य में पटेल, कुरमी, कूर्मि इत्यादि उपनाम प्रचलित है।

20. उत्तराखण्ड : बैसवार, बरदिया, भारती, गंगवार, जयसवार, कनौजिया, खरविन्द, पतरिहा, सैथवार, सिंगरौर, सिंगरौल, चनऊ, पाटनवार, अथरिहा, अवधिया, सैचवार, चन्द्रौल, चंदेल, चंदौर, पातालिया, सचान, उत्तम, महतो, निरंजन, कटियार, यदुवंशी, राठौर, रावत, वंशवार, मनवा, सिंह, वर्मा, पटेल, चौधरी, आर्य आदि।

21. तेलंगाना : रेड्डी, राव, नायडू, बोंगले, रामाराव, रंगैया, मूर्ति, वर्मा, भूपाल, चौधरी, सिंह, पटेल, सेट्ठी, नायडू, कापू, देसुरी, कापलू, पंकति, वेलम्मा, पंत कालपू, पिल्ले, कुति, तरपूकापू, तेलगा, मुनरू कापू इत्यादि।

22. उड़ीसा - उड़ीसा के किसान समुदाय कूर्मि क्षेत्रीय, खंडायत क्षेत्रीय, अघरिया,कोलथा,बाणायत, कालंजी, दलपति, खंडायत महानायक, प्रधान समाज कापू और अलीय खंडायत आदि नाम से परिचित हैं। कूर्मि क्षत्रिय समाज सेवा हेतु उड़ीसा में कई संस्था पंजीकृत हैं। दक्षिण उड़ीसा के कूर्मियों में कई उपाधि है जैसे– नायक, प्रधान, चौधरी, मंडल, सामंतराय, पात्र, मल्लिक, सिंह, महारथा, राऊत, मांझी, संग्रामसिंह अदि। इसके साथ खंडायतों की भी बहुत ज्यादा उपाधि है– अभिदमन, इन्द्रसिंह, उत्तरराय, कुंवर, गुडराय, गजेन्द्र, गढ़ई, खूटिंया, चौधरी, जेना, जगदेव, बिसाल, बाघ, बारिक, बिसोई, भुजबल, महापात्र, सामंत आदि।

23. सिक्किम - हिन्दू धर्म राज्य का प्रमुख धर्म है, जहाँ पर बौद्ध धर्म के अनुयायी बहुतायत से रहते

हैं। यहाँ बिहार के लोग काम की तलाश में आये जो कालान्तर में यहाँ के निवासी हो गये, जिनमें कूर्मि समुदाय के लोग भी निवासरत है ।

24. नेपाल- विश्व के एक मात्र हिन्दू राष्ट्र में भी कूर्मि जाति के लोग निवासरत हैं, जो सभी कृषि कार्य में ही निरत हैं । यहाँ के कूर्मियों में उपजातियों की प्रथा नहीं है । लेकिन बिहार नेपाल सीमावर्ती क्षेत्र में अधिकतर चंदेल उपजाति के कूर्मियों की बहुलता है ।

क्र.	उपजाति	निवास-तहसील/जिला	उपनाम (सरनेम)
1.	अथरिया	जांजगीर-चांपा, कोरबा, पामगढ़	कश्यप, कूर्मि, कौशिक
2.	एकबहियाँ	लोरमी, तखतपुर, रतनपुर, पामगढ़	कश्यप
3.	बघईयाँ	सीपत (बिलासपुर)	कौशिक, कश्यप, वर्मा
4.	बड़गैया	धरसींवा (रायपुर)	वर्मा
5.	बैस	धरसींवा (रायपुर), कुरुद (धमतरी) रतनपुर (बिलासपुर)	बैस, बैसवाड़े, कश्यप, कौशिक, वर्मा
	बैसवार	धरसींवा (रायपुर), कुरुद (धमतरी)	बैस, बैसरा, कश्यप, कौशिक, वर्मा
6.	चन्द्रनाहूँ 1	दुर्ग, कवर्धा, महासमुन्द, धमतरी, राजनांदगांव, रायपुर, बेमेतरा	चन्द्राकर, चन्द्रवंशी, कश्यप, कौशिक, भारद्वाज, चन्द्रनाहू
	चन्द्रनाहूँ	तखतपुर, लोरमी, मुंगेली, बलौदाबाजार	चन्द्राकर, कश्यप
	चन्द्रनाहूँ	मस्तुरी, पामगढ़	चन्द्राकर, कश्यप
7.	चन्द्रनाहूँ 2	जांजगीर-चांपा, रायगढ़, कोरबा, रायपुर	चन्द्रा, चन्द्राकर, लाल, वर्मा, चन्द्रेश
8.	चन्द्रनाहूँ 3	बिलासपुर, जांजीगर-चांपा, कोरबा, सरगुजा	चन्देल, कश्यप
9.	चन्दनियाँ	मुंगेली, लोरमी, पंडरिया	कश्यप, चन्द्राकर, कुलमित्र
10.	देसहा	मुंगेली, बिलासपुर, पंडरिया	कश्यप, कौशिक, वर्मा
11.	दिल्लीवार	दूर्ग बालोद, राजनांदगांव, राजिम	देशमुख, दिल्लीवार, बेलचंदन, महतेल, सुकतेल, वर्मा, हरदेल, भारदीय, गौतम, हरमुख, अमृत, पिपरिया
12.	गहवई 1	बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, बेमेतरा	गहवई, कौशिक, वर्मा
	गहवई 2	तखतपुर, रतनपुर, बिलासपुर	गहवई, कौशिक, वर्मा
13.	गवेल	जांजगीर-चांपा, रायगढ़	गभेल, गवेल, वर्मा
14.	कनौजिया	बिलासपुर, जांजगीर-चांपा, रायपुर, बलौदाबाजार	कश्यप, कौशिक, वर्मा, सिंगसार्वा, रायसागर
15.	मनवा	रायपपुर, दुर्ग, भाठापारा, बिलासपुर, बेमेतरा, कवर्धा, बलौदाबाजार, राजनादंगांव, कांकेर, जगदलपुर, धमतरी, मुंगेली	वर्मा, बघेल, कश्यप, नायक, चन्द्रवंशी, बघमार, परगनिहा, खिचरिया, टिकरिहा, मढ़रिया, धुरंधर, आडिल, सिरमौर, कपूर, बंछोर, पैकरा, बिजौरा
16.	परगिया	बिलासपुर, रायपुर,	कश्यप, वर्मा
17.	पाटनवार	सीपत, मस्तुरी, बिल्हा, (बिलासपुर)	पाटनवार, वर्मा
18.	राजवाड़े	बिलासपुर, जांजगीर-चांपा, कोरबा, बलौदा	राजवाड़े
19.	सनाड्य	बिलासपुर	कौशिक, सन्नाट, सनाड्य
20.	सरेटी	बिलासपुर, दुर्ग, बेमेतरा	कौशिक, वर्मा, कश्यप
21.	सिंगरौर	बेमेतरा, दुर्ग	वर्मा
22.	सिंगरौल	बिलासपुर, मुंगेली, दुर्ग, रायपुर, कवर्धा, कोरिया, तखतपुर, पथरिया	सिंगरौल, कश्यप, वर्मा, सिंघरौल
23.	सुरेटी	कवर्धा	वर्मा, कौशिक, शांडिल्य, हरदेल
24.	तिरेला	डोंगरगढ़, कवर्धा, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव	कश्यप, भंवर, देशमुख, वर्मा, डोटे, कांकड़े, ठाकरे, पटेल
25.	अन्य	सरगुजा, बलरामपुर, कोरिया, पेन्ड्रा, मरवाही, बिलासपुर, रायपुर जशपुर, सुरजपुर	कश्यप (कुनबी), पटेल, सिंह, सिंगौर, सचान, कौशिक,चन्द्राकर,चन्द्रौल,गहलोत,पटेल,पाटीदार

कूर्मि समाज से प्रमुख संवैधानिक पदों में सुशोभित होने वाले व्यक्तित्व की सूची

कूर्मि समुदाय से राष्ट्रपति :

1. महामहिम कूर्मि नीलम संजीव रेड्डी (गृह राज्य-आंध्रप्रदेश) कार्यकाल-1977-1982 तक।
2. महामहिम कूर्मि प्रतिभा पाटिल (गृह राज्य-महाराष्ट्र) कार्यकाल -25 जुलाई 2007-25 जुलाई 2012 तक।

कूर्मि समुदाय से प्रधानमंत्री :

1. कूर्मि एच.डी. देवेगौड़ा (गृह राज्य-कर्नाटक) कार्यकाल-1 जून 1996-21 अप्रैल 1997।

कूर्मि समुदाय से उप प्रधानमंत्री :

1. कूर्मि सरदार वल्लभ भाई पटेल (गृह राज्य-गुजरात) कार्यकाल - 15 अगस्त 1947 से 15 दिसम्बर 1950।

कूर्मि समुदाय से राज्यपाल

1 महा. कूर्मि के.वी. रघुनाथ रेड्डी (गृह राज्य-आन्ध्रप्रदेश) कार्यकाल -त्रिपुरा 1990-1993, पश्चिम बंगाल 14 अग.1993-27 अप्रैल 1998, उड़ीसा 31 जन. 1997-12 फर. 1997, उड़ीसा 31 दिस. 1997-27 अप्रैल 1998।

2. महा. कूर्मि बी. सत्यनारायण रेड्डी (गृह राज्य-आन्ध्रप्रदेश) कार्यकाल- उत्तर प्रदेश 12 फर. 1990-25 मई 1993, उड़ीसा 1 जून 1993-17 जून 1995, पश्चिम बंगाल 13 जुलाई 1993-14 अगस्त 1993।
3. महा. कूर्मि बेजावाड़ा गोपाल रेड्डी (गृह राज्य-आन्ध्रप्रदेश) कार्यकाल-उत्तर प्रदेश 1 मई 1967-1 जुलाई 1972।
4. महा. कूर्मि डॉ. एम.चेन्ना रेड्डी (गृह राज्य-आन्ध्रप्रदेश) कार्यकाल-उत्तर प्रदेश 1974-1977, पंजाब 1982-1993, राजस्थान फर. 1992- मई 1993, ताामिलनाडू 1993-2 दिस.1996 (निधन तक)।
5. महा.प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह (गृह राज्य-बिहार)कार्यकाल -त्रिपुरा 16 जून 1995 से 22 जून 2000 तक।
6. महा. कूर्मि प्रतिभा पाटिल (गृह राज्य-महाराष्ट्र) कार्यकाल-राजस्थान 8 नव. 2004 से 21 जून 2007।
7. महा. कूर्मि सी.विद्यासागर राव, (गृह राज्य-आन्ध्रप्रदेश) कार्यकाल-महाराष्ट्र 30 अगस्त 2014 से 4 सितम्बर 2019 तक, तमिलनाडू 31 अगस्त 2016 से 6 अक्टूबर 2017 (अति.प्रभार)।
8. महा. कूर्मि एस.एम. कृष्णा (गृह राज्य-कर्नाटक) कार्यकाल-महाराष्ट्र 12 दिसम्बर 2004 से 5 मार्च 2008।
9. महा. कूर्मि आनन्दी बेन पटेल, (गृह राज्य-गुजरात) कार्यकाल-म.प्र. 23जन.2018 एवं छ.ग. 15 अग.2018 से29 जुलाई 2019 (अति प्रभार) उ.प्र.29 जुलाई 2019 से वर्तमान तक।

10. महा.कूर्मि रमेश बैस (गृह राज्य-छत्तीसगढ़) कार्यकाल-त्रिपुरा29 जुलाई 2019 से वर्तमान तक।
11. महा.कूर्मि विस्वभूषण हरिचंदन (गृह राज्य-उड़िसा) कार्यकाल-आंध्रप्रदेश 29 जुलाई 2019 से वर्तमान तक।

कूर्मि समुदाय से राज्यवार मुख्यमंत्रियों की सूची :

आंध्रप्रदेश राज्य -

1. कूर्मि बेजावाड़ा गोपाल रेड्डी, मुख्यमंत्री कार्यकाल -28 मार्च 1955- 1 नव. 1956 राज्यपाल-उत्तर प्रदेश 1 मई 1967-1 जुलाई 1972।
2. कूर्मि नीलम संजीव रेड्डी, मुख्यमंत्री कार्यकाल -1 नव.1956-11 जन. 1960, 12 मार्च 1962-20 फर.1964 , राष्ट्रपति -1977-1982
3. कूर्मि के. ब्रम्हानंद रेड्डी मुख्यमंत्री कार्यकाल -29 फर. 1964-30 सित. 1971
4. कूर्मि जालागाम वेंगल राव मुख्यमंत्री कार्यकाल - 10 दिस. 1973 -6 मार्च 1978
5. कूर्मि टी.रामाराव रेड्डी, मुख्यमंत्री कार्यकाल -अक्टू..1980- फर.1982
6. कूर्मि भवनम् वेंकटरमी रेड्डी मुख्यमंत्री कार्यकाल -फर. 1982-सित.1982
7. कूर्मि डॉ. एम.चेन्ना रेड्डी, मुख्यमंत्री कार्यकाल -6 मार्च 1978-11 अक्टू.1980, 3 दिस.1989-17 दिस.1990 राज्यपाल-उत्तर प्रदेश 1974-1977, पंजाब 1982-1993, राजस्थान फर. 1992- मई 1993, तमिलनाडू 1993-2 दिस.1996 (निधन तक)
8. कूर्मि कोटला विजय भास्कर रेड्डी, मुख्यमंत्री कार्यकाल - 20 सित.1982-9 जन 1983, 9 अक्टू.1992-12 दिस.1994
9. कूर्मि नन्दमुरी तारक रामाराव -मुख्यमंत्री कार्यकाल - 9 जन.1983-16 अग.1984, 16 सित.1984-2 दिस. 1989, 12 दिस.1994-1 सित. 1995
10. कूर्मि जर्नादन रेड्डी, मुख्यमंत्री कार्यकाल-1990-1992
11. कूर्मि वाय.एस.राजेश्वर रेड्डी, मुख्यमंत्री कार्यकाल -14 मई 2004 -2 सित. 2009
12. कूर्मि एन.के.किरण कुमार रेड्डी, मुख्यमंत्री कार्यकाल - 25 नव.2010-1 मार्च 2014
13. कूर्मि एन.चन्द्रबाबू नायडु, मुख्यमंत्री कार्यकाल -14 सित.1995-14 मई 2004, 8 जून 2014 से 29 मई 2019
14. कूर्मि वाय.एस. जगनमोहन रेड्डी, मुख्यमंत्री कार्यकाल - 30 मई 2019 से वर्तमान तक

कर्नाटक राज्य -

1. कूर्मि क्यासाम्बल्ली चेन्गालार्या रेड्डी, (प्रथम मुख्यमंत्री कर्नाटक) मुख्यमंत्री कार्यकाल - 25 अक्टू.1947-30 मार्च 1952 (मैसुर राज्य)।
2. कूर्मि केंगल हनुमंथैहा, मुख्यमंत्री कार्यकाल -30 मार्च 1952 से 19 अगस्त 1956।
3. कूर्मि एच.डी.देवगौड़ा, मुख्यमंत्री कार्यकाल -11 दिस.1994-31 मई 1996, प्रधानमंत्री-1 जून 1996-21 अप्रैल 1997
4. कूर्मि एस.एम. कृष्णा मुख्यमंत्री कार्यकाल - 11 अक्टूबर 1999 से 28 मई 2004 राज्यपाल -

कार्यकाल-महाराष्ट्र - 12 दिसम्बर 2004 से 5 मार्च 2008 ।

5. कूर्मि डी.व्ही. सदानंद गौड़ा, मुख्यमंत्री कार्यकाल - 5 अग.2011-11 जुलाई 2012 ।
6. कूर्मि एच.डी.कुमार स्वामी, मुख्यमंत्री कार्यकाल - 3 फर. 2006-8 अक्टू. 2007, 23 मार्च 2018 से 23 जुलाई 2019 तक ।

तेलंगाना-

1. कूर्मि के.चन्द्रशेखर राव मुख्यमंत्री कार्यकाल -2 जून 2014-6 सित.2018

बिहार-

1 कूर्मि दीप नारायण सिंह, मुख्यमंत्री कार्यकाल -1 फर. 1961-18 फर. 1961

2. कूर्मि नितीश कुमार, मुख्यमंत्री कार्यकाल 3 मार्च 2000 -10 मार्च 2000, 24 नव.2005-26 नव. 2010, 26 नव. 2010-20 मई 2014, 20 नव.2015- 26 जुलाई 2017, 27 जुलाई 2017-वर्तमान तक ।

छत्तीसगढ़-

1. कूर्मि भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री कार्यकाल - 17 दिसम्बर 2018 से वर्तमान तक ।

उड़ीसा

1. कूर्मि हरेकृष्णा मेहताब, मुख्यमंत्री कार्यकाल 19 अक्टू.1956-6 अप्रैल 1957, 6 अप्रैल 1957-22 मई 1959, 22 मई 1959-25 फर. 1961

महाराष्ट्र

1. कूर्मि यशवंत चाव्हाण, मुख्यमंत्री कार्यकाल -1 नव.1956-5 अप्रैल 1957,1 मई 1960-19 नव.1962
2. कूर्मि शंकरराव चव्हाण, मुख्यमंत्री कार्यकाल -21 फर. 1975-16 मई 1977
3. कूर्मि शरद पवार मुख्यमंत्री कार्यकाल 18 जुलाई 1978-17 फर. 1980, 26 जून 1988-3 मार्च 1990, 4 मार्च 1990-25 जून 1991, 6 मार्च 1993-14 मार्च.1995
4. कूर्मि विलास राव देशमख, मुख्यमंत्री कार्यकाल18 अक्टू.. 1999-16 जन.2003, 1 नव.2004- 4 दिस.2008
5. कूर्मि अशोक चव्हाण, मुख्यमंत्री कार्यकाल -8 दिस.2008-15 अक्टू..2009
6. कूर्मि पृथ्वीराज चव्हाण, मुख्यमत्री कार्यकाल -11नव.2010-26 सित.2014

गुजरात

1. कूर्मि चिमन भाई पटेल, मुख्यमंत्री कार्यकाल 17 जुलाई 1973-9 फर. 1974, 4 मार्च 1990-25 अक्टू 1990, 25 अक्टू 1990-17 फर. 1994
2. कूर्मि बाबू भाई जे. पटेल, मुख्यमंत्री कार्यकाल 18 जून 1975 -12 मार्च 1976, 11 अप्रैल 1977-17 फर. 1980
3. कूर्मि केशुभाई पटेल मुख्यमंत्री कार्यकाल 14 मार्च 1995-21 अक्टू.1995, 4 मार्च 1998-अक्टू. 2001
4. कूर्मि आनन्दी बेन पटेल, मुख्यमंत्री कार्यकाल 22 मई 1914- 7 अग. 2016, राज्यपाल-

म.प्र.23 जन. 2018 एवं छत्तीसगढ़ 15 अग.2018 से 29 जुलाई 2019 (अति प्रभार) उ.प्र. 29 जुलाई 2019 से वर्तमान तक।

केरल

1. कूर्मि पट्टम ए.थानू. पिल्लई मुख्यमंत्री कार्यकाल-22 फर. 1960-26 सित. 1962।
2. कूर्मि वासुदेवन नायर, मुख्यमंत्री कार्यकाल-29 अक्टू.1978-7 अक्टू. 1979।

गोवा

1. कूर्मि प्रमोद सावंत, मुख्यमंत्री कार्यकाल-19 मार्च 2019 से वर्तमान तक।

वर्तमान अर्थात अक्टूबर 2019 की स्थिति में कार्यरत कूर्मि समाज के केन्द्रीय मंत्रियों की सूची :-

1. **कूर्मि धर्मेन्द्र प्रधान,** (गृह राज्य-उड़िसा) केन्द्रीय मंत्री-पेट्रोलिय प्राकृतिक, गैस एवं इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार, कार्यकाल- 30 मई 2019 से वर्तमान तक।
2. **कूर्मि डी.वी. सदानंद गौड़ा** (गृह राज्य-कर्नाटक) केन्द्रीय मंत्री-रसायन एवं खाद्य उर्वरक, मंत्रालय, भारत सरकार, कार्यकाल- 30 मई 2019 से वर्तमान तक।
3. **कूर्मि अरविंद गणपत सावंत** (पटेल) (गृह राज्य-महाराष्ट्र) केन्द्रीय मंत्री-भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उपक्रम मंत्रालय, भारत सरकार, कार्यकाल- 30 मई 2019 से वर्तमान तक।
4. **कूर्मि संतोष गंगावर** (गृह राज्य-उत्तरप्रदेश) राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रम एवं रोजगार, मंत्रालय, भारत सरकार, कार्यकाल- 30 मई 2019 से वर्तमान तक।
5. **कूर्मि मनसुख माडविया** (गृह राज्य-गुजरात) राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जहाजरानी एवं रसायन मंत्रालय, भारत सरकार, कार्यकाल- 30 मई 2019 से वर्तमान तक।
6. **कूर्मि जी.कृष्णा रेड्डी** (गृह राज्य-तेलंगाना) राज्यमंत्री गृह मंत्रालय, भारत सरकार, कार्यकाल- 30 मई 2019 से वर्तमान तक।
7. **कूर्मि पुरुषोत्तम रूपाला** (गृह राज्य-गुजरात) राज्यमंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, कार्यकाल- 30 मई 2019 से वर्तमान तक।

वर्तमान अर्थात अक्टूबर 2019 की स्थिति में कार्यरत कूर्मि समाज के राज्यपालों की सूची :-

1. महामहिम कूर्मि आनन्दी बेन पटेल, (गृह राज्य-गुजरात) कार्यकाल-म.प्र.23 जन. 2018 एवं छत्तीसगढ़ 15 अग.2018 से 29 जुलाई 2019 (अति प्रभार)उ.प्र.29 जुलाई 2019 से वर्तमान तक।
2. महामहिम कूर्मि रमेश बैस (गृह राज्य-छत्तीसगढ़)कार्यकाल-त्रिपुरा 29 जुलाई 2019 से वर्तमान तक।
3. महामहिम कूर्मि विस्वभूषण हरिचंदन (गृह राज्य-उड़िसा) कार्यकाल-आंध्रप्रदेश 29 जुलाई 2019 से वर्तमान तक।

वर्तमान अर्थात अक्टूबर 2019 की स्थिति में कार्यरत कूर्मि समाज के मुख्यमंत्रियों की सूची :-

1. **कूर्मि भूपेश बघेल,** मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़, कार्यकाल – 17 दिसम्बर 2018 से वर्तमान तक।

2. **कूर्मि नितीश कुमार,** मुख्यमंत्री बिहार, कार्यकाल–27 जुलाई 2017–वर्तमान तक ।
3. **कूर्मि वाय.एस.जगनमोहन रेड्डी,** मुख्यमंत्री आंध्रप्रदेश, कार्यकाल–30 मई 2019 से वर्तमान तक
4. **कूर्मि प्रमोद सावंत,** मुख्यमंत्री गोवा, कार्यकाल–19 मार्च 2019 से वर्तमान तक ।

वर्तमान अर्थात अक्टूबर 2019 की स्थिति में कार्यरत कूर्मि समाज के उपमुख्य मंत्रियों की सूची :-

1. **कूर्मि डॉ आश्वस्थ नारायण,** उपमुख्यमंत्री कर्नाटक, कार्यकाल -26 जुलाई 2019 से वर्तमान तक ।
2. **कूर्मि नितिन भाई पटेल,** उप मुख्यमंत्री गुजरात , कार्यकाल-6 अगस्त 2016 से वर्तमान तक ।

कूर्मि समाज की उपलब्धियाँ एक नजर में (वर्तमान तक संख्यात्मक जानकारी)

राष्ट्रपति - 2 प्रधानमंत्री - 1 उप प्रधानमंत्री - 1 राज्यपाल - 11 मुख्यमंत्री - 38

n n n

कूर्मि चेतना गीत

कूर्मि है हम कर्म योगी 4
धर्म हमारा सत्य शांति
मानवता के हम है योगी, कूर्मि है हम कर्म योगी 4
अन उपजाने मिट्टी में पसीना खुब बहाते हैं 2
मेहनत की फल बांटकर सबकी भूख मिटाते हैं 2
देश की खातिर सीमा पर हम 2
अपना शीश चढ़ाते हैं कूर्मि है हम कर्म योगी 4
कूर्मियों का देश भारत कूर्मि शान बढ़ाते हैं 2
कहीं कुनबी, कम्मा, कुदुम्बी, वक्कालिंगा कहाते हैं 2
अध्यात्म की अंध मोह व अंधविश्वास मिटाते हैं 2
कूर्मि है हम कर्म योगी 4
राजपाठ हो हाथों में तो नया इतिहास बनाते हैं....2
हर जाति हर राज देश में एकता का अलख जगाते हैं....2
चकोर कहे हर मानव को ये प्रेम का पाठ बढ़ाते हैं 2
कूर्मि है हम कर्म योगी 4

रचयिता–कूर्मि चन्द्रशेखर 'चकोर'

अक्टूबर 2019 की स्थिति अनुसार वर्तमान में कूर्मि समाज के सांसदों की सूची

कुल लोक सभा सांसदों की संख्या - 67 (67 * 100 / 541 =12 % प्रतिनिधित्व) तथा कुल राज्य सभा सांसदों की संख्या - 15 (15 * 100 / 245 =6 % प्रतिनिधित्व)

Gujarat - Member of Parliament (Loksabha)

1 **Shri. Rameshbhai Lavjibhai Dhaduk,** (Porbandar), Dasijivan Krupa,9/11, Kailashbag, Dremland, Hotel Street, Gondal, Gujarat, Mob : 09825046200, E-mail : ramesh.dhaduk68@gmail.com

2 **Shri. Naranbhai Bhikhabhai Kachhadiya,** (Amreli), Sankul Road,Kanani Vadi, Amreli Bypass, Amreli, Gujarat - 361545, Tel: 02792-227878/011-23325105 Mob: 09925140545Mob: 09013180182
E-mail : mpamreli@gmail.com, mp_amreli@rediffmail.com

3 **Shri. Mohanbhai Kalyanji Kundariya,** (Rajkot) "Shivam Place, Darpan Society, Ravapar Road, Morbi, District - Borbi - 363641Tel: 02822-234400.Mob: 09825005386, Flat No. C1/31, Pandara Park, New Delhi - 110001
Tel : 011-23075386, Fax: 011-23380121 E-mail : mk.kundariya@sansad.nic.in, mk.kundariya@yahoo.com

4 **Shri. Hasmukhbhai Sombhai Patel,** (Ahmedabad East), 32, Vosjal Park Society, Ghodasar, Ahmedabad - 380050.Gujarat. Mob : 09327426122, E-mail : hasmukh_1160@yahoo.com

5 **Shri. Mitesh Rameshbhai Patel,** (Anand), Milankunj Society, At P.O. Vasad, Gujarat Mob: 09824024934 E-mail : mitesh@toordal.com

6 **Smt. Shardaben Anilbhai Patel,** (Mehsana) "10, Utsav Bunglows, Opp - T.V. Statopm, Thaltej, Ahmedabad, Gujarat. Ph: 02762-245563 E-mail : shardaapatel@gmail.com

7 **Shri. C.R. Patil,** (Navsari) "Shri. C.R. Patil,43-44, Dinabandhu Society, Bhatar Road, Surat - 395007 Gujarat Tel: 0261-2242501 Mob: 09824127694501, New M.S. Flats, Dr. Bishambar Das Marg, New Delhi - 110001 Tel: 011-2309336709013180249 E-mail : cr.patil@sansad.nic.incrpatiloffice@ymail.com, c_r_patil@yahoo.com"

Chhattisgarh - Member of Parliament (Loksabha)

8 **Shri Vijay Baghel,** (Durg), 7/B Street - 38, Sec - 5, Bhilai Nagar, C.G. Mob: 08770360478 vijay.baghel1503@gmail.com

Bihar - Member of Parliament (Loksabha)

9 **Shri Kaushalendra Kumar,** (Nalanda), Vill - Haidarchak, P.O. Khorampur, Thana Islampur, District - Nalanda, Bihar. Tel : 06122-310011, Mob: 09013180187, 0933467532247-49, South Avenue, New Delhi - 110011 Tel : 011-2 3 7 9 5 3 1 2
Mob : 9013180187, 09711062731 E-mail : kaushalendra.k@sansad.nic.in

10 **Shri. Rampreet Mandal,** (Jhanjarpur) Shri. Rampreet MandalDurgipatti, P.O. Khutauna, District - Madhubani, Madhubani - 847403 Mob: 09939992757

Andhra Pradesh- Member of Parliament (Loksabha)

11 **Shri. Lavu Sri Krishna Devarayalu,** Narasaraopet, D.No. 3-30-5/32, Brundavan Gardens Mob: 09491747777
E-mail : krishna.lavu@yahoo.in

12 **Shri. Jayadev Galla, Guntur** A - 54, Road-11, Film Nagar, Jubilee Hills, Hyderabad-500034 Mob: 09704697788, Room No. 111, and 112, New Building, Western Court Mob: 09717419535 jayadev.galla@sansad.nic.in jg@jayadevgalla.in

13 Shri. Srinivas Kesineni, Vijayawada, Kesineni Bhavan,Pinnalavari Street, Vijayawada - 520002 Andhra Pradesh Tel : 0866-2577885 Mob: 0789394676765, South Avenue, New Delhi - 110011Tel : 011-23012351 Mob: 09013869929
E-mail kesineni.srinivas@sansad.nic.in

Karnataka - Member of Parliament (Loksabha)

14 **Shri. D.V.Sadananda Gowda,** Bangalore North 15-22-1390/4 ""KAMALA"" 2nd Cross, Kankanandy Bendoorwell Lower, Mangalore, Dakshina Kannada - 575002, KarnatakaMob: 094481232491, Tyagraj Marg, New Delhi - 110011
Tel : 011-23795006 Mob: 9868180269 E-mail : sadananda.gowda@sansad.nic.in, sadanandagowda@yahoo.com

15 **Shri Prajwal Ravanna,** Hassan, House No. 43, Padavalahippe Village, Kasaba Hobli, Holenarasipura Taluk, Hassan District, Karnataka - 573211Mob: 09448364483 E-mail : prajwal8055revanna@gmail.com

16 **Shri Prathap Simha,** Mysore, Mysore Jaladarshini, DC -2, Cottage, Hunsur, Main Road, Mysore - 570005
Tel: 0821-2444999 Mob : 0948309889936, South Avenue, New Delhi-110011 Tel : 011-23793768 Mob:

09013869192, 09483098899 E-mail : prathap.simha@sansad.nic.in, mepratap@gmail.com

17 **Smt. Sumalatha Ambareesh,** (Mandya) 172/A, 21st Main, 2nd Phase, J.P. Nagar, Bangalore-560078, Karnataka, 09845052494 (M) E-Mail : sumabi@yahoo.com

18 **Shri Bache B.N. Gowda,** (Chikkballapur) No. 114, Lalbagh Road, Krishnappa Lay Out,Bangalore-560027, Karnataka, Tels. (044) 28150202, 09444141400 (M) E-Mail : sharathbachegowda@gmail.com

19 **Shri Doddaalahalli Kempegowda Suresh,** (Bangalore Rural) 602/A-6, 18th Cross, Upper Palace Orchards, Sadashivanagar,Bengaluru - 560080, Karnataka, Tel : (080) 23617000, 09845029142 (M) dksuresh18@gmail.com

20 **Km. Shobha Karandlaje** (Udupi Chikmagalur) 16, 2nd Main 3rd Cross, Chikkamaranahalli, New Bel Road, Karnataka, 09448087039 (M) Tel : (011) 23717975, 09448087039 (M) E-mail : karandljeshobha@gmail.com

21 **Shri Nalin Kumar Kateel** (Dakshina Kannada) No. 201, Ashoka Apartment,(Near Daiwajna Kalyana Mantapa), Hoigebail Road, Ashok Nagar,Mangalore - 575006 Karnataka, Tels : (0824) 2448888, 09448549445 (M) mpdkannada@gmail.com

Rajasthan - Member of Parliament (Loksabha)

22 **Shri. P. P. Chaudhary,** Pali, House No. 6, Central School Scheme, Jodhpur, Rajasthan- 342011Tel : 0291-2671282 Mob: 0941413573519, Teen Murti Lane, New Delhi - 110011.Tel: 011-23013031, 23017469 Mob: 09013869351, 09910830307 E-mail : pp.chaudhary@sansad.nic.in, ppchaudhary@gmail.com, mos-mlj@gov.in

23 **Shri. Devji Mansingram Patel,** Jalore, 10, Kalbiyon, Ka Vas, Vill- Jajusan, Sanchore, Jalore, RajasthanTel: 02979-210078, 285787Mob: 094141584888, Mahadev Road, New Delhi-110001 Tel : 011-23313450Mob: 09013180388
E-mail : dm.patel@sansad.nic.in, devjimp@gmail.com

Jharkhand- Member of Parliament (Loksabha)

24 **Shri. Chandra Prakash Choudhary,** Giridih, Village - Sandi, P.O. Sandi, Block-Chitrapur, District - Ramgarh, Jharkhand - 829150 Mob : 09572863363 E-Mail : cpcajsuparty@gmail.com

25 **Shri. Bidyut Baran Mahato,** Jamshedpu, Vill- Krishnapur, P.O. Industrial Area, Adityapur, P. S. Rit, Distt- Seraikella, Kharsawan, Jharkhand - 831013Mob: 09470386555177, North Avenue, New Delhi - 110001, Tel : 011-23092517
E-mail : mpbidyutmahato@gmail.com

Madhya Pradesh - Member of Parliament (Loksabha)

26 **Shri Ganesh Singh,** (Satna) Friends Colony, Near ITI, Satna, Madhya Pradesh - 485001 Tel: 07672-257999 Mob: 094251725088, Gurudwara Rakab Ganj Road, New Delhi - 110001Tel : 011-23323644 Mob: 09013180008"
E-mail sganesh@sansad.nic.in loksabhasatna@gmail.com

Maharashtra- Member of Parliament (Loksabha)

27 **Dr. Subhash Ramrao Bhamre,** (Dhule), 16, Badgujar Plot, 80 Feet Road, Parola Road, Dhule - 424001 Tel: 02562-234630,233368 Mob: 0982316076025, Meena Bagh, New Delhi - 110011 Tel: 011-23063814 Mob: 09823160760 sr.bhamre@sansad.nic.in, drsubhashbhamre11@gmail.com, dr.subhash.bhamre@gmail.com

28 **Ms. Bhavana Gawali (Patil),** (Yavatmal) Washim Plot No. 34A, Samarthwadi, Yavatmal, Maharashtra Tel: 07232-2253595 Mob : 0986818022242, Canning Lane, New Delhi - 110001 Tel: 011-23782070 Mob : 09868180222 gb.pundlikrao@sansad.nic.in, bhavana.gawali0222@gmail.com

26 **Shri. Udayanraje Pratapsingh Bhonsle,** (Satara), 1, Shukarawarpeth, Jalmndir Place, Satara- 415002. Tel: 02162 283103/4 Mob: 09822477700, 09422477700C-1/17, Pandara Park, New Delhi - 110003Tel: 011-23782196
E-mail : udayanrajebhonsle@gmail.com

27 **Shri. Prataprao Patil Chikhalikar,** (Nanded) At/P.O Chikhali, Tal-Kandhar Distt- Nanded - 431746 Mob : 09881414777
E-mail : pravin.chikhalikar7@gmail.com

28 **Shri. Sambhajirao Mane Dhairyasheel,** Hatkanangle, 347, Rukadi, Tal- Hatkanangale Kolhapur, Maharashtra Tel : 0230-2585733Mob: 09422044444 E-mail : dhairyasheelmane@gmail.com

29 **Shri. Sanjay Shamrao Dhotra,** Akola At & Post - Palso, (Badhe) Teh. Akola, Distt- Akola- 444001 Tel : 0724-2457214, 2452000AB-95, Shahjahan Road, New Delhi - 110003 Tel: 011-23078281 Mob: 9868180257"
E-mail : sanjaysdhotre@gmail.com

30 **Shri. Hemant Tukaram Godse,** Nashi, Laxmi Niwas, Sansari Gaon,Maharashtra - 422401 Tel: 0253-2493254 Mob: 09822090707B-601, Gomti, M.S. Flats, BKS Marg, Opp - RML Hospital Gate No. 4, New Delhi - 110001. Tel: 011-23723607Mob: 09096397307, 08275016161 E-Mail : ht.godse@sansad.nic.in, nashikmphg@gmail.com

31 **Shri Prataprao Jadhav,** Buldhana, Shivaji Nagar, Mehkar, Distt - Buldhana, Mahashtra Tel: 07262-2247777 Mob: 0901318000317, Canning Lane, New Dlehi - 110001Tel: 011-23072412"

E-mail : prataprao.jadhav@sansad.nic.in, jadhavprataprao25@gmail.com"

32 Shri. Sanjay Haribhau Jadhav, Parbhani, Late Balasaheb Thakre Nagar, House No. 10, Jintur Road, Parbhani, Maharashtra Tel: 02452-224254 Mob: 09422175500B-402, MS Flats, B.K.S. Marg, New Delhi - 110001 Mob: 09868223496
E-mail : jadhav.sanjay@sansad.nic.in

33 Shri. Sanjay Sadashivrao Mandlik, Kolhapur Chimgaon, P.O. Murgud, Tal - Kagal, District Kolhapur, Maharashtra Tel : 0231-2656183Mob: 09922998099 E-mail : sanjaymandlik099@gmail.com

34 Shri. Ranjeetsinha Hindurao Naik, Madha, Survey No. 406/407, At. P.O.-Nimbhore, Tal - Phaltan, Distt - Satara - 415528 Maharashtra Mob: 9592959796 E-mail : rhnswaraj@gmail.com

35 Shri. Hemant Patil (Hingoli) Tukai, H.No. 1/10/623, Raviraj Nagar, Taroda Naka Nanded, Maharashtra Mob: 09422871426
E-mail : patilhemant09@gmail.com

36 Shri. Sanjay Ramchandra Patil, Sangli At. & P.O Chinchani, Tal-Tasgaon, Distt - Sangli, Maharashtra - 416416 Tel: 02346-258404 Mob : 0982280400413 E, Ferozshah Road, New Delhi - 110001.Tel : 011-23782733 Mob : 09013869292, 09266378487 E-mail : sanjaykaka.patil@sansad.nic.in, sanjaykaka404@gmail.com

37 Shri. Unmesh Bhaiyyasaheb Patil, Jalgaon At/P.O.- Daregaon, "Sangharsh", Near Bhushan Mangal Karyalay, Bhadgaon Road, Chalisgaon, MaharashtraMob: 09423976388 E-Mail : unmeshbp@yahoo.com

38 Shri Omprakash Bhupalsingh Rajenimbalkar, (Osmanabad) At.- Govardhanvadi, P.O. Dhoki, Teh. & Distt-Osmanabad - 413508 Maharashtra, Mob: 09960625777 / 09822352000 E-mail : omraje01@gmail.com

39 Shri. Vinayak Bhaurao Raut, (Ratnagiri) Matrukrupa, Balwadi, Datta Mandir Road, Vakola, Santacruz (East) Mumbai - 400055.Mahashtra Tel : 022-26672759 Mob: 09820400219, C-4, M.S. Flats, Baba Kharak Singh Marg, New Delhi - 110001Tel : 011-23319060 E-mail : vinayakbraut@gmail.com, vb.raut@sansad.nic.in

40 Shri. Arvind Ganpat Sawant, Mumbai-South, 3/87, Mithibai Bldg., Aacharya Donde Marg, Sewree, Mumbai - 400015, Mahashtra Tel : 022-24163600 Mob: 09869004488702, Narmada Apartment, Dr. B.D.Marg, New Delhi - 110001 Mob: 09969004488 E-mail : arvind.sawant@sansad.nic.in arvindsawantg@gmail.com

41 Shri. Rahul Ramesh Shewale, (Mumbai-South) Central, At "Shivtirtha" 10B/12, B.A.R.C., New Mandala Colony, Opp - Gate No. 6, Sion-Trombay Road, Mumbai - 400088, MahashtraTel: 022-25582244167, South Avenue, New Delhi - 110011 Tel: 011-2379472 6Mob: 09869982244 E-Mail : rr.shewale@sansad.nic.in rahul.shewale2014@gmail.com

42 Dr. Shrikant Eknath Shinde, (Kalyan) 101, Shiv Shakti Bhavan, Kisan Nagar - 2, Wagle Estate, Thane (W) - 400604 Maharashtra Tel: 022-25813758 Mob: 0986711282031, Meena Bagh, Maulana Azad Road, New Delhi - 110011 Tel: 011-23061719Mob: 09013869272 E-mail : shrikantshinde87@yahoo.in

43 Smt. Supriya Sadanand Sule, (Baramati) Silver Oak, Eastate, House No. 2, Breach Candy Mumbai - 400026 Mahashtra Tel : 022-23515605/235196586, Janpath Road, New Delhi - 110001.
Tel: 011-23018870/23018619Mob: 09820060033 E-mail : supriyassule@gmail.com

44 Shri. Rajan Baburao Vichare, (Thane) B-103 D, Almeida Apartment, Charai, Thane (West) Mumbai - 400601 Mahashtra Tel : 022-25436767/25424997 Mob: 09821191111173, South Avenue, New Delhi - 110011 Tel: 011-23794670 rb.vichare@sansad.nic.inrajanbvichare@gmail.com

45 Dr. Sujay Radhakrishna Vikhepatil, (Ahmednagar) At. P.O.- Loni Br., Tal - Rahata Ahmednagar, Maharashtra Tel: 02422-273466 Mob: 09823212345 E-mail : sujay8998@gmail.com

46 Shri Dada Rao Patil Danve, (Jalna) Shivaji Nagar, Jalna Road, Tah.- Bhokardan, Dist-Jalna-431114, Maharastara Tel : 02485-240125, 240555, Mo. : 9868180280, E-mail : raosaheb.danve@sansad.nic.in

Odisha - Member of Parliament (Loksabha)

47 Smt. Pramila Bisoyi, (Aska) Cheramaria, P.O. Nalabanta, P.S. Aska, Distt - Ganjam, Odisha - 761111 Mob: 07683941934 E-mail : pramilabisoyi2019@gmail.com Odisha

48 Shri. Bhartruhari Mahtab, (Cuttack) Beharibag, Chandni Chowk, Cuttack - 753002 Odisha Tel: 0671-2507568 / 2508003 Mob: 09437228455, AB-94, Shahjahan Road, New Delhi - 110011 Tel: 011-23782589/23782742 Mob: 09868180308 E-mail : bhartruhari.mahatab@gmail.com

49 Shri. Achyutananda Samanta, (Kandhamal) N3/92, IRC Village, P.O./PS Nayapalli, Bhubaneswar, Odisha - 751015 Mob: 09437000928 E-Mail : achyuta.samanta@sansad.nic.in

50 Smt. Sangeeta Kumari Singh Deo, (Bolangir) Shailashree, P.O. Patnagarh, Distt - Bolangirr (Orissa)
E-Mail : sangeeta.deo@sansad.nic.in

West Bangal - Member of Parliament (Loksabha)

51 Shri. Jyotirmay Singh Mahato, (Purulia) Village- Patradih, Post - Pusti, PS- Jhalda, Distt - Purulia - 723212 Mob: 09933787883 E-Mail : jyotirmaysingh111@gmail.com

Uttar Pradesh - Member of Parliament (Loksabha)

52 Shri. Pankaj Chaudhary, (Maharajganj) Harbans Gali, Sekhpur, P.O. Geeta Press, Gorakhpur - 273001 Tel: 0551-2341360Mob: 09868180565/09415008246 Bungalow No. 20, Pt. Ravishankar Shukla Lane (Canning

Lane), Ferozeshah Road, New Delhi -110001Tel: 011-23782857 Mob: 09868180565
pankaj.chowdhary@sansad.nic.in, pankajchaudharyloksabha91@gmail.com

53 Shri. Santosh Kumar Gangwar, (Bareilly) Bharat Sewa Trust Bhawan, Pilibhit Road, Prem Nagar, Bareilly - 243122 Tel: 0581-2545555/2577777, 2577020(R) House No. 13, Sunehri Bagh Road, New Delhi - 110011 Tel: 011-23062135 / 23062136, E-Mail : santoshg@sansad.nic.insantosh.gangwar.bareilly@gmail.com, mot_fb@nic.in

54 Smt. Anupriya Patel, (Mirzapur) C-3/1, Aman Patel, Complex, 3/15, Vishnupuri, Kanpur-208002 Tel: 0522-2235211 Mob: 090138694825, Safdarjung Road, New Delhi - 110011 Tel: 011-23792610 Mob: 09013869482 E-Mail : officeanupriyapatel@gmail.com

55 Smt. Keshari Devi Patel, (Phulpur) IVill - Derrawari, P.O. Panduwa, Tehsil - Bara, Prayagraj Mob: 09415215358 / 09839505644 E-mail : kesharidevipatelphulpur@gmail.com

56 Shri. R.K.Singh Patel, (Banda) Baldav Ganj, Kashai Road, Karvi, Chitrakoot, Uttar Pradesh Tel: 05198-236100 Mob: 0941514399351, North Avenue, New Delhi - 110001Tel: 011-23093177Mob: 9013180108 E-Mail : rks.patel@sansad.nic.in

57 Shri Shiromani Ram, (Shrawasti) Vill - Pratappur, Chamurkha, Post - Chamurkha, Akbarpur, Ambedkarnagar Mob: 09838127700 E-mail : ramshiromani4949@gmail.com

58 Shri. Rajesh Verma, (Sitapur), SitapurTown & Post - Tambaur, Distt - Sitapur, Uttar Pradesh Tel: 05862-257352 Mob: 94151177776, Windsor Place, Opposite Hotel Le Merridian, New Delhi - 110001Tel: 011-23320140 Mob: 09013869433 E-mail : verma.rajesh@sansad.nic.in, suneetkverma@yahoo.co.in

59 Smt. Rekha Arun Verma, (Dhaurahra) Village - & P.O Maqsoodpur, Teh - Mohamadi, Distt - Lakhimpur Kheri, Uttar PradeshTel: 023-39997Mob: 0993508195276, North Avenue, New Delhi - 110001Mob: 09013869432

Telangana - Member of Parliament (Loksabha)

60 Shri. Bheemrao Baswanthrao Patil, (Zahirabad), Plot No. 55, Sagar Society, Banjara Hills Road, Hyderabad - 500034 Mob: 09000745000B-302, M.S. Flats, B.K.S. Marg, New Delhi - 110001Tel: 011-23765542 E-Mail : bbpatil7777@gmail.com

61 Shri Anumala Revanth Reddy, (Malkajgiri) H.No. 3-48, Kondareddipally Village, Vangoor Mandal, Distt - Nagarkurnool - 509349 Mob: 09440900009 E-Mail : revanthreddy@yahoo.com

62 Shri. G.Kishan Reddy, (Secunderabad) H.No. 3-4-4, Flat No. 502, Legend Shri Lakshmi Appartments, Bhoomanna galli, Kachiguda Station Road, Hyderabad - 500027 Tel: 040-27568188 Mob: 09949099997 E-mail : gkishanreddy@yahoo.com

63 Dr. Gaddam Ranjith Reddy, (Chevella) H.No. 8-2-293/82/NL/137-138, New MLA and MP Colony, Jobliee Hills-500033 Hyderabad Mob: 09866395845 E-Mail : greddy1962@yahoo.co.in

64 Shri. Komati Reddy Venkat Reddy, (Bhongir) H.No. 6-2-842, Meerbagh Colony, Hyderabad Road, Nalgonda Town, Distt - Nalgonda - 508001 Mob : 09948297777 E-Mail : komatireddynlg@gmail.com

65 Shri Kotha Prabhakar Reddy, (Medak) Plot No., 82, Lumbini, SLN Sprints, Botanical Garden, Kondapur, Hyderabad, Telangana Mob: 09849037800/0801966666633, Meena Bagh, Opp - Vigyan Bhawan, New Delhi - 110001. Mob: 09849037800/08019666666 E-Mail : kr.prabhakar@sansad.nic.in, kprmedakmp@gmail.com

66 Shri. Manne Srinivas Reddy, (Mahabubnagar "Shri. Manne Srinivas Reddy, H.No. 2-89, Gurukunta Village and Post Nawabpet Mandal, Mahbubnagar - 509340. TelanganaMob: 09640879663 E-mail : mannesrinivasreddy225@gmail.com

67 Shri. Uttam Kumar Reddy, Nalgonda, House No. 3-199, Kodad Village and Mandal, Distt - Suryapet Mob: 09848051082, E-mail : uttamreddyn@gmail.com

Member Of Parliament (RAJYA SABHA) List :-

1 **Smt. Chhaya Verma**, (Indian National Congress) **Chhattisgarh**
C-501, Swarna Jayanti Sadan, Dr. B.D.Marg, New Delhi 110001, Tel. : 23724656, Mob: 9013181434

2 **Prof. M.V. RajeevGowda,** (Indian National Congress) **Karnataka**
1361, 9th Cross Road, J.P. Nagar, 1st Phase, Bengaluru 560078, Mobile: 9013181074, 9013181075

3 **Shri D. Kupendra Reddy** (Janata Dal -Secular) **Karnataka**
7557, Vangalahalli, HSR Layout, Sector-1, Agara Post, Bangalore, Mo.:9980055599, 9448155599

4. Shri Beni Prasad Verma, (Samajwadi Party) **Utter Pradesh**
3, Kushak Road, New Delhi - 110 003Tels.(011) 23792660 (R) 23061486 (O) Mo. : 9868180834

5. Shri Ravi Prakash Verma (Samajwadi Party) **Utter Pradesh**
Usha Nikunj, Mohalla-Bhoor, Gola Gokaran Nath, District-Lakhimpur Kheeri. 262802
Tel. : (05876)233433, Mobile: 9415325786, Mobile: 9868180092

6. Shri ParshottamRupala (Bharatiya Janata Party) **Gujrat**

2A, South Avenue Lane, New Delhi, 23793327, 23793347 Mob:9013181488, 9825326660

7. **Shri Mansukh Mandaviya** (Bharatiya Janata Party) **Gujrat**
   202, Swarna Jayanti Sadan Deluxe, Dr. B. D. Marg, New Delhi
   Tel : (011) 23312725, 23736067, 23736068, Mobile: 9013181970, 9013181551
8. **Shri Dharmendra Pradhan** (Bharatiya Janata Party) **Madhya Pradesh**
   19, Teen Murti Marg, New Delhi. Tel. (011) 23014511, 23018696, Mobile: 9868180290, 9013181290
9. **Shri Rajmani Patel** (Indian National Congress) **Madhya Pradesh**
   17, Ferozeshah Road, New Delhi 110001 Tel. : (011) 23070004
10. **Smt. Vandana Chavan** (Nationalist Congress Party) **Maharastara**
    602, Swarna Jayanti Sadan Deluxe, Dr. B.D. Marg, New Delhi 110001
    Tel. : (020)24333190, Mobile: 09422029000
11. **Shri Sanjay Dattatraya Kakade** (Independent & Others)
    Lilawati Niwas, Plot No. 9, Yashwant Ghadge Nagar, University Road, Bhosale Nagar, Pune, Mahrashtra
12 **Shri Praful Patel** (Nationalist Congress Party)
    26, Gurudwara Rakabganj Road, New Delhi 110001 Tel. : 23311986, (R), Mo.:9013181080
13. **Shri Sharad Pawar** (Nationalist Congress Party)
    6, Janpath Road, New Delhi Tel. : 23018870, 23018619, 23018892,21430616
14. **Shri Narayan Rane** (Bharatiya Janata Party)
    28, Akbar Raod, New Delhi 110011 Tel. : 011-23793020, 011-23010310 9868181400
15. **Shri Ram Chandra Prasad Singh** (Janata Dal (United))
    C-402, Swarna Jayanti Sadan, Dr. B.D. Marg, New Delhi 110001
    23708200, 23359207,23721258 Mobile: 9013181559, Mobile: 9473199323

कूर्मि ध्वज गीत

हे कूर्मि ! क्षत्रिय जाति महान, हे राष्ट्र धर्म, धरती की शान ।
हे शौर्य ! शक्ति के महापूंज, हे कर्मठ, धरती के किसान ।।
जागो कूर्मि क्षत्रिय महान...

रधुवंश सूर्य के ज्योति पुंज, तुम रणभेरी की महा गूंज ।
हे वीर शिवा के महावंश, हे लौह पुरूष के लौह अंश ।।
हे इतिहासों के महासपूत, हे देश धरा के क्रांतिदूत ।
अपनी गौरव-गरिमा को जान ।। जागो कूर्मि क्षत्रिय महान...

है शस्त्र तुम्हारा सहज धर्म, हल थाम किया है कृषि कर्म।
युग युग तक देश की शक्ति बन, तुमने ही दिया जीवन का मर्म।
हे वसुन्धरा के महाछत्र, हे इतिहासों के स्वर्ण-पत्र।
तुम देश धरा के महाप्राण ।। जागो कूर्मि क्षत्रिय महान...

अब जागो हमें करना विकास, त्यागो रूढ़ि व अन्धविश्वास ।
नवयुग की इस नव बेला में, हमको करना स्वजाति विकास ।।
नव जागृति की अब ले मशाल, जागो जागो हे नौ निहाल ।
आगे बढ़ना है सीना तान ।।

जागो कूर्मि क्षत्रिय महान...